झरोखे जीवन के

काव्य-संग्रह

बिमला रावर सक्सेना

अनेकता में एकता का प्रतीक
के.बी.एस प्रकाशन, दिल्ली

ISBN No :- 978-93-90580-75-0

कर्म-बद्ध-संकल्प

के.बी.एस प्रकाशन दिल्ली

मुख्य कार्यालय :- 111 - ए.जी-एफ, आनन्द पर्वत, इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110005

शाखा कार्यालय :- 26, प्रभात नगर, पीलीभीत रोड, बरेली, उत्तर प्रदेश

शाखा कार्यालय :- 74, एस.के.फुटकेयर, हथवा मार्किट, नज़दीक- पी.एन.बी. बैंक, छपरा, बिहार- 841301

दूरभाष :- 9871932895, 9868089950

e-mail :- kbsprakashandelhi7@gmail.com

•

मूल्य : 200.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2021 © बिमला रावर सक्सेना

मुद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

गुख्य आवरण – बिमला रावर सक्सेना

Book Name JHROKHE JIVAN KE
by BIMLA RAVAR SAXENA

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

झरोखे जीवन के

कविता केवल शब्द समूह नहीं है, कविता अर्थ नहीं है, कविता वह अनुभूति भी नहीं, कविता वह रीति-नीति भी नहीं, जिस बंधन और तुकांत में कविता दिखती है। कविता काष्ठ में छिपी हुई अग्नि के समान है, कविता ऋषि के ध्यान में उतरी ध्वनि है, कविता किसी संवेदना का उन्मुक्त प्रवाह है, हो सकता है, वो कोई आग हो, कविता गंधर्व का राग हो, हो सकता है कविता बे-आवाज़ हो। कविता शब्दों के साज की मधुरतम अनुभूति है। कविता का सीधा सम्बन्ध हृदय से है। कविता में कही गई बात का असर तेज और स्थायी होता है। कविता के मूलतः दो पक्ष हैं, आन्तरिक यानि भाव पक्ष, और बाह्य यानि कला पक्ष। कविता को मर्मस्पशी बनाने में सार्थक ध्वनि समूह का बड़ा महत्व है। विषय को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने में शब्दार्थ योजना का बड़ा महत्व है। शब्दों का चयन कविता के बाहरी रूप को पूर्ण और आकर्षक बनाता है। कवि की कल्पना शब्दों के सार्थक और उचित प्रयोग द्वारा ही साकार होती है। अपनी हृदयगत भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कवि भाषा की अनेक प्रकार से योजना करता है, और इस प्रकार प्रभावशाली कविता रचता है।

शब्द शक्ति, शब्द गुण, अलंकार लय, तुक, छंद, रस, चित्रात्मक भाषा इन सबके सहारे कविता का सौंदर्य संसार आकार ग्रहण करता है। लय और तुक कविता को गति और प्रवाह प्रदान करते हैं। लयात्मकता कविता को संगीतमय और गेय बनाती है, जिससे कविता आत्मा के तारों को झंकृत कर आलौकिक आनन्द प्रदान करती है।

कविता मन से उतरती है, उतारी नहीं जाती है, पूरी तैयारी और छंद ध्वनि राग साधना के साथ। कविता तुलसी का लोकगीत है, सूर की अंधी वात्सल्य-भक्ति दृष्टि है, मीरा की प्रेम दीवानगी, कबीर की फकीरी है। दादू, नानक की समाज दृष्टि, रैदास की दैन्य भक्ति है। बिमला रावर सक्सेना जी की कविता जीवन के साज पे गुजरी हुई दशा का गान है। उनकी ''कविता'' केवल रसात्मक या कर्णप्रिय अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि वह कानों के माध्यम से हृदय को आंदोलित करती है। समाज और उसकी सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाली कविता ही वास्तविक कविता

दिल से निकले दो शब्द

माननीय पाठकगण, मेरा नया काव्य-संग्रह **''झरोखे जीवन के''** आपकी सेवा में प्रस्तुत है। जीवन के विभिन्न सन्दर्भों से जुड़े मेरे अनुभव, मेरे विचार, वर्षों पहले जीकर लिखे वे अहसास, जो घर-गृहस्थी, पारिवारिक कर्तव्यों की उलझनों में भी, कभी-कभी कागज़ पर उतर जाते थे, और जल्दी से तालेवाले पिटारे में बंद हो जाते थे, तथा वक़्त बदलने के बाद भी नई कविताओं के पिटारे में से झाँकती वे सब कवितायें, पाठकों के कर कमलों में पहुँचने को आतुर हैं। मेरे दिल से निकली, दिल की सीधी, सरल... सादी भाषा, यदि आपके दिल में प्रवेश कर पाये, मेरी कवितायें आपको खुशी दे पायें, तो मैं भी स्वयं में प्रसन्नता का अनुभव करूँगी।

आपको पुस्तक में सुख-दुख से भरी, प्रोत्साहन और प्रेरणा देनेवाली, हर प्रकार की कवितायें पढ़ने को मिलेंगी, किन्तु जहाँ दुखभरी कविता भी जीवन का एक सत्य है, तो जीवन में दुख के बाद सुख आना भी, एक अटल सत्य है। क्योंकि हमें मानना चाहिए कि यदि दुख न हो, तो सुख का अनुभव और मूल्यांकन हम कैसे कर पाएंगे। गीता में भी श्री कृष्ण का यही आदेश और आग्रह है मनुष्य से कि जीवन में दुख-सुख को समान मानकर आचरण करना चाहिए। हमारा दुख यदि परीक्षा है, तो सुख उस जीवन के श्रम का मधुर परीक्षाफल है।

मेरी पुस्तक का परिचय 'शब्द शूल', 'शब्द संधान', 'शब्द गुलेल' जैसी रचनाओं के लिखने वाले ''शब्दों के धनी'' शब्द मसीहा दे रहे हैं, जिनके एक-एक शब्द में गागर में सागर छिपा होता है। मेरे हृदय से निकले शब्दों के समूह रूप में निकली कविताओं का परिचय करवा रहे हैं, मेरे प्रिय बंधु, शब्दों के साधक, स्नेह के आगार श्री शब्द मसीहा। मेरी ओर से उन्हें सदैव बहुत-बहुत स्नेह और आशीर्वाद। मेरी इस पुस्तक के प्रकाशक श्री संजय 'शाफ़ी' को स्नेहिल आशीर्वाद और शुभकामनायें।

सहृदय पाठकगण मेरी यह कृति आपको समर्पित है, मुझे आशा है कि मेरी भावाभिव्यक्ति में, आपके मन को भी समान अनुभूति होगी, और आप मेरी रचना को अपनी रचना बनाकर स्वीकार कर पाएंगे। आपकी प्रतिक्रियाओं का मुझे बे-सब्री से इंतज़ार रहेगा।

बिमला रावर सक्सेना

नई दिल्ली

होती है। यही उसका सौंदर्य है। आचार्य विश्वनाथ का कहना है, 'वाक्यम् रसात्मकं काव्यम्' यानि रस की अनुभूति करा देने वाली वाणी काव्य है। तो पंडितराज जगन्नाथ कहते हैं, 'रमणीयार्थ-प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यानि सुंदर अर्थ को प्रकट करने वाली रचना ही काव्य है। और पंडित अंबिकादत्त व्यास का मत है, 'लोकोत्तरानन्ददाता प्रबंधः काव्यानाम् यातु' यानि लोकोत्तर आनंद देने वाली रचना ही काव्य है। लेकिन संस्कृत के विद्वान आचार्य भामह के अनुसार ''कविता शब्द और अर्थ का उचित मेल'' है। किन्तु सटीक रूप में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने ''कविता क्या है'' शीर्षक निबंध में कविता को ''जीवन की अनुभूति'' कहा है।

वास्तव में कवि/कवयित्री की प्रतिभा यत्र-तत्र बिखरे सौन्दर्य को संकलित करके एक नू आनन्दमयी सृष्टि की रचना करती है। हर युग में कवि अपनी कविता के माध्यम से युग सत्य के ही दर्शन कराता है। कविता में सत्य, शिव और सौन्दर्य की आलौकिक रसधार, जो सबको एक समान आनन्दित करती चलती है, समाज को नई चेतना प्रदान करती है, आनन्द का सही मार्ग दिखाती है, और मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा करती है। इस संग्रह की कवितायें इस कथन की सत्यता प्रमाणित करती हैं।

बिमला रावर जी की कविताओं में जीवन सूत्र मोतियों की भांति चम. कते हैं, और सुधि पाठक उन्हें तुरंत चुग भी लेते हैं अपनी मेधा की दृष्टी से।

रोने से अगर दुःख मिट जाते
तो सब रोते ही रहते
फिर संघर्षों में तप-तपकर
दुःख-दर्द भला हम क्यों सहते

अपनी एक रचना में आप कहती हैं :-

आँखों से आँसू न बहाना
यह जीवन है बहुत सुहाना
दुख से कभी नहीं घबराना
दुख-सुख तो है आना-जाना

एक अनोखी जीत है जीवन
एक मधुर संगीत है जीवन

जीवन के प्रति यही सकारात्मक भाव कवयित्री ने जीवन के आठ दशकों में अपनाया है, और अपनी कविता के माध्यम से जीवन के उन्हीं झरोखों से शब्दों के सुसज्जित प्रकाशपुंज कविता रूप में पाठकों के समक्ष परोस रही हैं। हमारे चारों ओर जीवन बिखरा पड़ा है, और हमें सीखने की जरुरत है:-

फूलों की मधु मुस्कानों से
मैंने भी हँसना सीख लिया
भ्रमरों की मधुर गुँजारों से
मैंने भी गाना सीख लिया

प्रकृति के साथ जब से मनुष्य ने सामंजस्य और एकता को विकास के नाम पर छोड़ा है, उसने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों और चुनौतियों को निमंत्रण दिया है। हमारा तथाकथित आधुनिक कहानेवाला समाज अपनी जड़ों से और मानव जीवन के प्राकृतिक मूल्यों से दूर होता जा रहा है। उसके जीवन में उसको चेहरे बदलने पड़ते हैं, भ्रम और छद्म का सहारा लेना पड़ता है अपनी आंतरिक उहापोह और कलह को छिपाने के लिए:-

कितने दर्द भरे हों दिल में
फिर भी जीते रहते हैं
होंठ बंद रख अन्दर- अन्दर
दुःख को पीते रहते हैं
मुख पर हँसी आँख में पानी
कवि भी कहते रहते हैं
हँसी और पानी की भाषा
दिल जाने या दिलवाला

हमारा जीवन दुख-सुख का मेला है। इस जीवन में हम कर्ता होते हुए

भी द्रष्टा भाव रखकर जियें तो जीवन अधिक सुन्दर हो सकता है। किसी चीज की स्वीकारोक्ति न होना ही तो दुःख है। मनचाहा न होना ही पीड़ा है। इससे कवयित्री भी संघर्ष करती हैं:-

बहाने बहुत ढूँढती हूँ जीने के लिये
पर सिर्फ़ अश्क ही मिलते हैं मुझे पीने के लिए

हर इक निगाह में ढूँढती हूँ थोड़ा-सा प्यार
हर इक आँख में ढूँढती हूँ थोड़ा-सा सकून

हर इन्सान के जीवन में आ जाये बहार
यही है मेरा सिर्फ़ एक जूनून

हमारे आसपास की दुनिया हो, समाज हो अथवा राजनीति हो, हमने धर्म के नाम पर एक आतंक मचा रखा है। इस खूबसूरत धरती को, जो परमात्मा की, प्रकृति के रूप में अभिव्यक्ति है, हमने कलुषित कर दिया है। इससे बचने के लिए हमें यह समझना जरुरी है कि :-

एक ईश है सबके दिल में
किसी नाम से उसे पुकारो
फिर क्यों लडें धर्म के पीछे
अपने मन में जरा विचारो
एक आत्मा सब के भीतर
सब में एक ख़ून की लाली
फिर क्यों काम करें हम ऐसे
जिन से हो जाये बदहाली

जीवन के भी रूप निराले हैं। कहते हैं कि सबसे मधुर गीत वे होते हैं जिन्हें दर्द के स्वर में गाया जाता है। ग़म और दर्द से तो जीवन का चोली-दामन जैसा साथ है। दर्द को तो हर हाल अपनाना ही पड़ता है।

लेकिन दूसरे के दर्द को अपनाना, उसका सहारा बनना ही सही मायने में इन्सान हो जाना है। ग़म को गीत बना लेने का हुनर बहुत बिरले लोग ही जानते हैं। किसी की व्यथा को आत्मसात कर लेना बहुत बड़े हृदय का परिचायक है। कवयित्री लिखती भी हैं:-

गीत बन गया था जो ग़म
जिसने सुना वही था नम
कहते हैं कवि बन जाता है एक वियोगी
समझा वही, व्यथा जिसने यह भोगी

बिमला जी कविताओं का संसार उनके जीवन की तरह बहुत विस्तृत है, हम इसमें जीवन के अनेक रंग देखते हैं। प्रकृति, मौसम, समाज, सैनिक, देश, विश्व, रिश्ते, रिश्तेदार, जीवन की घुटन, एकाकीपन, आशा, निराशा के अनेक भाव समाहित हैं। जीवन के झरोखों की तरह ही ये कवितायें जीवन के अन्दर से फूटती किरणों के समान हैं। जीवन के हर आयाम से गुजरते हुए लिखी गई ये सभी कवितायें, एक बेहतर जीवन की कामना करती हैं। एक आशा जगाती हैं।

मैं बिमला रावर सक्सेना जी जिन्हें मैं अपनी बड़ी दीदी, दीदी माँ मानता हूँ, उनको इस काव्य-संकलन के लिए अपने दिल की अतल गहराइयों से शुभकामनायें देता हूँ, और कामना करता हूँ कि वे स्वस्थ रहें, सक्रीय और सृजन में लीन रहते हुए साहित्य और समाज को लाभान्वित करती रहें।

भवतु सब्ब मंगलम ।

केदार नाथ शब्द मसीहा
नई दिल्ली

अनुक्रमांक

माँ भारती.....13
जीना सीख लिया.....14
चंद पंक्तियाँ.....15
दबे पाँव आकर.....16
राज़ का हक़दार.....17
तुम्हारी याद में.....18
निराला इन्साफ़.....19
जाने दिलवाला.....20
मानव शक्ति.....23
अपना घर.....24
एक प्रश्न.....25
चंद शे'र.....26
चाँद से अंगार.....27
अँधेरे हृदय के.....28
ज़िन्दगी और टूटते स्वप्न.....29
ख़ामोश पूजा.....30
कहीं मिलेंगे.....31
ज़िन्दगी से ज़िन्दगी बेज़ार है यारो.....32
यादों की सौगात.....33
भारत माता की बेटी.....34
प्रार्थना.....35
कर्मपथ.....36
फ़ना के बाद भी.....37
करो हिम्मत ज़रा.....38
कैसी ये मेरी ज़िन्दगी.....39
जीने के लिये.....40

या फिर मुझे बुला ले........ 41
विधाता की रीत........ 42
विद्यालय........ 43
उस एक की कमी........ 44
प्रलय राग........ 45
नये युग का सर्जना........ 46
मधुर सपना........ 47
ईश्वर का नामकरण........ 48
नया कलेवर........ 49
दिनकर........ 50
ये रिश्तेदार........ 51
सब रूठ गए........ 52
अतीत का पन्ना........ 53
धरती बने निराली........ 54
क़दम रुक न जायें........ 55
आ रहे भगवान दिनकर........ 56
हमें प्यार अपनी माटी से........ 57
वीर बढ़ते ही चलो........ 58
बरसी मूसलाधार........ 59
लहराये तिरंगा लहराये........ 60
न सुने दर्द न कहे कोई........ 61
बरसों तलक क्यों........ 63
नये ख़्वाब........ 64
मिली जीवन रेखा........ 65
न शिकायत कोई........ 66
पथ जीवन धारा का........ 67
पूछा ज़र्रे-ज़र्रे से........ 68
जीवन के साठोत्तर वर्षों में........ 69

अधूरे सपनों से आगे.......... 72
खुद से ही थक गये हम.......... 73
आसमान में शोर मचा री.......... 74
हम खुद के हाथों छले गये.......... 75
प्रभु तुम्हारे बिना.......... 76
जीने का मक़सद.......... 77
सपनों की मायानगरी में.......... 78
कोई याद पुरानी सी.......... 79
ज़िन्दगी तो इक तमाशा.......... 80
मेरा दिवाना मन.......... 81
हुई गुम मेरी राह.......... 82
हमें इक जुनून था.......... 83
शायद वह आये.......... 84
कहें क्या उन्हें.......... 85
एक छोटी-सी शिकायत.......... 86
कविता कहाँ गई.......... 87
गीत बन गया.......... 88
हमारे दर्द और हमदर्द.......... 89
लेकिन कब तक.......... 90
धुँधलाती तस्वीरें.......... 91
गूँज कोई न उठी.......... 92
हर पाँच साल बाद.......... 93
धरती के सरसाते पेड़.......... 84
कचरा.......... 95
सूर्यदेव का आगमन.......... 96
ख़ामोशियों की चादर.......... 97
जीवन की राहें.......... 98
घनन-घनन गरजो रे मेघा.......... 99

अम्बर के राही........ 100
ख़ामोश गूँज........ 010
सलवटें और जमघटें........ 102
रूठे गीत-संगीत........ 103
मेले चलाने वाले........ 104
बीती बात........ 105
जब खिला गुलाब........ 106
बातों-बातों में........ 107
कुछ आते हैं कुछ जाते हैं........ 108
अपनी ही नज़रों में गिरकर जीना........ 109
अपने रिश्ते और नाते........ 110
मातृभूमि माँ भारत माता........ 111
ज़रा ऐतबार चाहा था........ 112
हज़ार अफ़साने........ 113
सवारी हवा की........ 114
बीते दिनों की बीती बातें........ 115
कभी-कभी जब हम........ 116
चमकीली यादें........ 117
सूरज और बादलों की जंग........ 118
वो छोटी-सी लड़की........ 119
अख़बार भी अख़बार नहीं रह गया........ 120
प्रशिक्षण नेताओं का........ 122
नई पीढ़ी की हार........ 125
वीराने में पनपते पौधे........ 126
अन्दर के उजालों को........ 127
लोकतंत्र का नया अर्थ........ 128
वह गूँजती ख़ामोशी........ 129
मरघट और पनघट........ 131

माँ भारती

माँ भारती
शीश पर तेरे हिमालय
मुकुट-सा सज्जित खड़ा है
तीन रंगों का उदधिजल
चरणों में तेरे पड़ा है
गगन तेरा चाँद तारों
सूर्य के नग से जड़ा है
क्रीड में तेरी असीमित
स्वर्ण-सा वैभव गड़ा है
स्वर्ग से शुभ नीर आकर
माँ तेरी नदियों में बहते
कोटि-कोटि सपूत तेरे
माँ तेरे आँचल में रहते
शस्य श्यामल माँ धरित्रि
स्वर्ग से भी उच्च कहते
साथ मिलकर साथ चलकर
विविध सुख दुख साथ सहते
विविध मौसम विविध जनगण
विविध धर्म परम्परायें
भिन्न जाति भिन्न भाषा
अपनी-अपनी मान्यतायें
किन्तु दिल हैं एक सबके
एक सबकी भावनायें
विविधता में एकता का
पाठ सब खुद को पढ़ायें
साथ मिलकर सब उतारें
जन्म भू की आरती/माँ भारती OOO

जीना सीख लिया

फूलों की मधु मुस्कानों से
मैंने भी हँसना सीख लिया
भ्रमरों की मधुर गुँजारों से
मैंने भी गाना सीख लिया
नन्ही बूँदो से सीख लिया
सीपी में मोती बन जाना
सागर की लहरों से मैंने
सबको अपनाना सीख लिया
नन्हे दीपक की ताक़त को
देखा तूफ़ानी रातों में
कोमल गुलाब के फूलों से
काँटों में जीना सीख लिया
अम्बर के उस ध्रुव तारे से
दृढ़ता का ज्ञान लिया मैंने
धरती के तरु की डाली से
मैंने झुक जाना सीख लिया
'वसुधैव कुटुम्बकम्' से मैंने
सबको अपनाना सीख लिया
दीवार पर चढ़ती मकड़ी से
गिर-गिर कर उठना सीख लिया
जीवन की हर इक ठोकर से
इक नया सबक़ सीखा मैंने
नित नये-नये संघर्षों को
संघर्षों से ही जीत लिया
फूलों की मधु मुस्कानों से
मैंने भी हँसना सीख लिया ○○○

चंद पंक्तियाँ

कभी ज़िन्दगी में ऐसा भी वक़्त आता है
हज़ारों दाग़ सीने में और इन्साँ मुस्कुराता है
दबाये आग के शोले छुपा तूफ़ान सीने में
हुआ जाता है दामन चाक फिर भी खिलखिलाता है

✦

सोचते हैं ज़िन्दगी जीने के क़ाबिल है नहीं
फिर भी जीना है और जिये जाते हैं
अब तो कुछ करने की हिम्मत भी नहीं है बाक़ी
ज़हर पीना है और पिये जाते हैं

✦

ज़िन्दगी मेरे लिये कुछ भी तेरे पास नहीं
तुझमें भी कोई भी विश्वास मेरे पास नहीं
फिर भी जीने का भरम रखना है ज़माने के लिये
चाहे जीने की कोई आस मेरे पास नहीं

✦

हसरतें पूरी मेरी हो भी नहीं पाईं थीं
आरज़ूओं के तराने भी अभी बाक़ी थे
ख़त्म क्यों कर दी मेरी दास्ताँ ऐ मेरे ख़ुदा
अभी तो ढेर से अफ़साने मेरे बाक़ी थे

✦

जो मेरी याद आज आ जाये
तो समझना कि कोई ग़ैर नहीं
है वही अजनबी-सी कोई
जिसको अपना कभी कहा ही नहीं

OOO

दबे पाँव आकर

कभी-कभी
अनजाने ही
कुछ अनचीन्हे
लोगों ने
दबे पाँव आकर
मेरी ज़िन्दगी के
अँधेरे खण्डहरों के
झरोखों को
यकायक
रौशनी से जगमगा दिया
मेरी ख़ामोश
ठहरी हुई ज़िन्दगी को
ठीक वैसे ही झनझना दिया
जैसे
ठहरे हुए पानी में
किसी ने एक कंकड़ फेंक कर
उसे तरंगों का
उमंगों का
चलने का
बढ़ने का
अहसास दिलाया हो
जैसे किसी वीराने को
उड़ते
गुज़रते पंछी की आवाज़ ने
जीवन का आभास कराया हो ○○○

राज़ का हक़दार

बाँट ले मुझसे जो ग़म
तूने छुपाये हैं हृदय में
एक कोई राज़ का
हक़दार होता है हमेशा
ज़िन्दगी के रास्तों में
यूँ अकेले तो
चला जाता नहीं है
दूसरा कोई भी दावेदार
होता है हमेशा
पथ के दावेदार को भी
राह के कुछ शूल देकर
ले बना साथी उसे भी
उसके दिल के फूल लेकर
दिल से दिल जब बाँट लेगा
दर्द और ग़म, दिल का अँधेरा
रौशनी राहों में होगी
और हट जायेगा ग़म में
डूबता बादल घनेरा
OOO

तुम्हारी याद में

मैं तुम्हारी याद में जल रही
तुम भूल कैसे मुझे गए
हो भी ग़म हैं तुमने अता किए
दे के फूल जैसे मुझे गए

बिना तेरे जीना भी जीना क्या
मुझे मरना उससे भी है भला
तेरी याद में अरे बेख़बर
दिन रात मेरा जिगर जला
कोई एक पल भी नहीं है जो
तेरी याद मैंने भुलाई है
जब जब ख़ुदा से दुआ करी
मैंने मौत ही तो बुलाई है

किए वादे तुमने हज़ार थे
कोई एक भी न निभा सके
मैं तो एक कोरी किताब थी
तुम लिख के कछ न दिखा सके
जो भी तुमने मुझको दिया सनम
वो लिखा था मेरे नसीब में
तू नहीं है, फिर भी है हौसला
तेरे ग़म तो मेरे क़रीब हैं

तेरी याद की यही लौ अभी
मेरी ज़िन्दगी में मचल रही
तुम भूल कैसे मुझे गए
मैं तुम्हारी याद में जल रही

○○○

निराला इन्साफ़

मेरी क़िस्मत को लिखा है तूने किस स्याही से
न धुलते ही हैं ये लेख न ये मिटते हैं

सारे ग़म दुनिया के भर-भर के वरक़ लिख डाले
कर दिये मेरे तो सब रात और दिन भी काले
कोई तो लिखता सुबूत मेरी बेगुनाही के

गल गई मोम सी मैं मिट गई तिल-तिल करके
ज़ख़्मों से भर गया सीना भी तो मुँह सिल-सिल के
अब तो तू देख तमाशे मेरी तबाही के

ओ जहाँ वाले ये इन्साफ़ भी निराला है
सबके हिस्से का ये ग़म इक मुझे दे डाला है
बड़े क़िस्से सुने हैं तेरी वाहवाही के

मेरी क़िस्मत को लिखा है तूने किस स्याही से
तेरे क़िस्से किसे सुनायें हम, कितने क़िस्से हैं तेरी बेवफ़ाई के

OOO

जाने दिलवाला

मेरे दिल के हर कोने में
बसी हुई तेरी माया
मैं प्रियतम तेरी परछाईं
तू भी है मेरी छाया
छाया-माया के रिश्ते को
कोई नहीं समझ पाया
इसके जादू तक तो पहुँचे
कोई गहरे दिलवाला

तुम पर मैंने किया न्यौछावर
अपना यह जीवन सारा
मैंने अपना अर्चन-वंदन
एक तुम्हीं पर है वारा
अर्पण करके ख़ुद को तुम पर
मुक्तिबोध सा है होता
कितना सुख ख़ुद को खोने में
दिल जाने या दिलवाला

कण-कण को तुझमें देखा है
तुझको देखा कण में
हर ज़र्रे में तेरी माया
बसा हुआ तू हर मन में
ढूँढ रहे हैं लोग तुझे
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में
पर तेरे कण-कण की माया
दिल जाने या दिलवाला

गिन-गिन कर लहरें सागर की
तुझे बुलाया करता हूँ
मुट्ठी भर कर रेत हाथ को
ख़ाली पाया करता हूँ
कब यह मुट्ठी भर पायेगी
नहीं बता सकता कोई
ख़ाली मुट्ठी का दुख जाने
कोई ख़ली दिलवाला

जबसे मैंने तुझको जाना
ख़ुद को भुला दिया मैंने
जीवन की हर कठिनाई में
तुझको बुला लिया मैंने
तीन लोक का धन मिल जाता
एक सहारा मिलने पर
असली धन की परिभाषा तो
दिल जाने या दिलवाला

तन जाते रिश्तो के धागे
रिश्ते अगर कभी छूटे
पड़ जातीं धागों में गाँठें
रिश्ते अगर कभी टूटे
धागों की ये गाँठें पल-पल
गड़ती रहती हैं दिल में
इनकी चुभन वही दिल जाने
जिसमें रहता दिलवाला

मेरे घर के हर कोने में
तू ही मुझ दिखाई दे
दीवारों की ईंट-ईंट से
तू ही मुझे सुनाई दे
घुला हवाओं में स्वर तेरा
मेरे घर में, आँगन में
पर देता बस उसे सुनाई
जो होता है दिलवाला

मेरे अपनों ने बैठाया
मुझे हाशिये पर लाकर
कैसा मोड़ ज़िन्दगी का यह
कहाँ रोऊँ अब मैं जाकर
एक सहारा जब खो जाता
सारा जग खो जाता है
पाकर खोना क्या होता है
जाने खोये दिलवाला

कितने दर्द भरे हों दिल में
फिर भी जीते रहते हैं
होंठ बंद रख अन्दर-अन्दर
दुख को पीते रहते हैं
मुख पर हँसी आँख में पानी
कवि भी कहते रहते हैं
'हँसी और पानी की भाषा'
दिल जाने या दिलवाला

OOO

मानव शक्ति

तू सर्वशक्ति का पुञ्ज अरे मानव है सब तेरे वश में
तू खोद गिरा कन्दर, पहाड़, तू काट गिरा चट्टानों को
तू बाँध बना सरिताओं पर, सोपान बना धरणीधर पर
प्रभु ने सिरजा था एक सेतु, शत सेतु बना रत्नाकर पर
दिनकर की ऊष्मा बंदी कर, अपने कर की ज़ंजीरों में
कर वह प्रचण्ड शक्ति वश में, जो नहीं तोप या तीरों में
फिर अग्निदेव को दास बना, फ़ौलाद ढाल, हथियार बना
कर दें क्षण में अरि का खण्डन, तू वज्र सदृश शस्त्रास्त्र बना
अपने भुजदण्डों के बल पर, नदियो से मनमाना जल ले
ऊसर बंजर न रहें कहीं, ले अरे हाथ में हल ले ले
इस शस्य श्यामला धरती पर जब जब न अंकुर आयेंगे
भारत के बेटे थिरक-थिरक नाचें, गायें, मुस्कायेंगे
पनघट की रानी नाचेगी, खेतों के राजा गायेंगे
मरघट में जीवन जागेगा, जब विजयी वीर हुँकारेंगे
निशि दिवस परिश्रम करने पर, युग-चरण सफलता चूमेगी
जन-जन जन गण मन गायेगा, सृष्टि रसमय हो झूमेगी
तेरी प्रगति को देख-देख, सुरदेव ठगे रह जायेंगे
हैं इन्द्र वरुण कुछ नहीं अरे, इक ओर खड़े रह जायेंगे
जल-थल-नभ अन्तरिक्ष पथ को, तू अपनी मुट्ठी में कर ले
तू नहीं भाग्य का दास अरे, सौभाग्य भाग्य तेरे वश में
तू सर्वशक्ति का पुञ्ज अरे मानव है सब तेरे वश में

OOO

अपना घर

सबसे अच्छा अपना घर है
कभी सुना था बचपन में
अटल सत्य था हमने जाना
आ पहुँचे जब पचपन में

पापा से कहते थे 'पापा, मामा के घर जायेंगे'
आम करौंदे जामुन केले तोड़-तोड़ कर खायेंगे
मामा का घर दूर गाँव में दूध मलाई का भंडार
ख़ूब बनायेंगे हम सेहत खा कर चीज़ें बारम्बार

देख शून्य में पापा कहते 'बेटी अब खेलो जाकर,
सबसे अच्छी अपनी रोटी सबसे अच्छा अपना घर'

आज कहा मेरी बेटी ने 'मम्मी, चलो किसी के घर,
चाचा के या मामा के या फिर ताऊ-ताई के घर
सारे बच्चे मिलकर घर में थक्कमपेल मचायेंगे
खेल-खेल कर थक जायेंगे तब जाकर सो जायेंगे'

पापा जैसे देख शून्य में मैं बोली 'जा बेटी जा,
काम बहुत करने हैं मुझको भैया को तू ज़रा बुला
काम बहुत है अपने घर में, अभी करेंगे सब मिलकर
नहीं किसी के घर है जाना, सबसे अच्छा अपना घर'

यह घर ही है स्वर्ग हमारा, क्या रखा है भटकन में
सबसे अच्छा अपना घर है, कभी सुना था बचपन में

एक प्रश्न

कितने दिन और जियें
कैसे जियें ये तो बता
चल दिया क्यूँ मुझे ठोकर लगा के
क्या थी मेरी ख़ता
क़समें-वादे सभी क्यों तोड़ दिये
रास्ते मंज़िलों के मोड़ लिये
ज़िन्दगी में भरी क्यों वीरानी
मैं तो थी सिर्फ़ तेरी दिवानी
अपने दिल से निकाला छोड़ दिया
अपनी दिवानी का
दिल क्यों तोड़ दिया
ज़िन्दगी मेरी एक भटकन है
हर एक साँस एक सिसकन है
सूने दिन-रात, सूने दिल और दिमाग़
बुझ गए मेरी ज़िन्दगी के चिराग़
कैसे कटते हैं दिन तुझे क्य पता
चल दिया क्यूँ मुझे ठोकर लगा के
क्या थी मेरी ख़ता?
○○○

चंद शे’र

किया जब भी याद तुमको
तुम इस अदा से आए
कि बुलाते रह गए हम
तुम लौट कर न आये

✦

तेरे सारे तीर हमने
सीने पे सह लिए हैं
आँसू भी सारे आँखों से
दिल में बह लिए हैं

✦

ये रौशनी भी कैसे आगे बिखर गई है
है कौन जिसने आकर अँधेरे मिटा दिये हैं

✦

ज़िन्दगी जीना बहुत दुश्वार है
जी सका इसको जो वो दिलदार है

✦

मेरे दर्द को हवा दे
तुम और मत बढ़ाओ
थोड़ा सुकून देकर
बिगड़ी मेरी बनाओ

✦

ऐ मालिक हम तो तुझे याद कर-कर के
ज़िन्दगी की गाड़ी चलाते रहे
आज लगता है जितना हम तुझे बुलाते हैं
उतना तुम हमें भुलाते रहे

✦

चाँद से अंगार

कभी भूल हमने करी और पछताये हैं
कभी चाहे सुख और ग़म पाये हैं
कभी उनकी बातों को सच मान बैठे
कभी यों लगा वो तो बिल्कुल ही झूठे
कभी शान्ति की आस में मोल ले ली लड़ाई
कभी जान मुश्किल से हमने छुड़ाई
कभी चाँद से अंगार हमने पाये हैं
कभी चाहे सुख और दुख-दर्द पाये हैं
कभी सोचा दुनिया हमारी नहीं है
हों कुछ भी मगर हम भिखारी नहीं हैं
कभी नींव विश्वास की हिल गई
कभी सबकी नफ़रत हमें मिल गई
क्यों विश्वास को तोड़ देते हैं अपने
बुरे वक़्त में छोड़ देते क्यों अपने
हमने हमेशा होम करते हाथ जलाये हैं
कभी हमने भूल करी और पछताये हैं
कभी बिना भूल किये भी पछताये हैं

○○○

अँधेरे हृदय के

कहीं भी नहीं है किरण रौशनी की,
कहाँ से मिटायें अँधेरे हृदय के।

नहीं चाह अब तो रही ज़िन्दगी की,
भरें घाव कैसे ये घायल हृदय के।

नहीं आ रहा है नज़र कोई ऐसा,
जो आकर भरे ज़ख़्म मेरे हृदय के।

नहीं कोई हमदर्द देता दिखाई,
जो आ बाँट ले दर्द मेरे हृदय के।

मिला काश होता कोई मीत ऐसा,
मिटाता अँधेरे जो मेरे हृदय के।

जो आशाओं की रौशनी को जलाकर,
जगाता उजाले अँधेरे हृदय के।

OOO

ज़िन्दगी और टूटते स्वप्न

सुख के कुछ दिन
आये थे ज़िन्दगी में
हमने भी बहारों के सपने
देखे थे ज़िन्दगी में
हमने भी प्यार के नग़्मे
गाये थे ज़िन्दगी में
हमने भी चाँद-तारों को तराने
सुनाये थे ज़िन्दगी में
हमने भी सागर की लहरों की तरह
बल खाये ज़िन्दगी में
फिर एक दिन
अपनों के हाथों ही
छल खाये ज़िन्दगी में
वक़्त बदला
बदल गये सारे
ग़म के बादल गहराये ज़िन्दगी में
सबकी नज़रों के
बदलते तेवर देखे
हम पहली बार घबराये ज़िन्दगी में
या ख़ुदा
हमको बना कठपुतली
ख़ूब नचाया तूने हमें ज़िन्दगी में
कभी हँसा कर
कभी रुला कर
ख़ूब जोकर बनाया हमें ज़िन्दगी में ०००

ख़ामोश पूजा

ज़ख़्म तूने जो दिये सहते गये
आँख से आँसू भी न बहने दिये
होंठ सी कर दिल में सब कहते गये
दिल के सब स्वर दिल में ही रहने दिये
याद तेरी जब कभी आने लगी
हमने दिल से यूँ कहा अब जा सँभल
प्यार तो ख़ामोश पूजा है ऐ दिल
खा ले ठोकर और फिर जा तू बहल
भाग्य में तुझसे बिछड़ना था लिखा
कैसे तुझको बाँधकर रखते भला
फिर भी तुझसे दूर हो, यूँ जी रहे
जैसे सूरज ज़िन्दगी का हो ढला
कुछ दिये थे ज़ख़्म तूने
कुछ ख़ुदा ने दे दिये
हमने भी सब सह लिये
आँसू भी न बहने दिये
OOO

कहीं मिलेंगे

ज़ख़्म दे गए क्यों तुम ऐसे
जो न कभी भरेंगे
जब-जब टीस उठेगी दिल में
तुमको याद करेंगे
भावनाओं में बहकर मैंने
आँसू मोल लिये हैं
प्रेम प्यार के बदले
दर्द और ग़म क्यों तोल दिये हैं
मैं एकाकी खड़ी रह गई
जीवन की बगिया में
जीवन नैया बही जा रही
तूफ़ानी नदिया में
एक-एक कर छोड़ गये सब
वो जो कभी थे अपने
स्नेह, प्यार, सुख, दुख की बातें
सभी बन गये सपने
तुम क्या गये ज़माना बदला
अपने बने पराये
उस पर याद तुम्हारी आकर
रैन दिवस तड़पाये
लिखा भाग्य में क्या विघना ने
कब तक ज़ुल्म सहेंगे
इस जग में न मिल पाये
उस जग में कहीं मिलेंगे
○○○

ज़िन्दगी से ज़िन्दगी बेज़ार है यारो

ज़िन्दगी दर्द का सिंगार है यारो
ज़िन्दगी एक टूटा तार है यारो

रूठ गया हमसे हर क़तरा ख़ुशगवारी का
ज़िन्दगी एक उजड़ा दयार है यारो

माना कि ज़िन्दगी में बेहद सितम सहे
पर किससे करें दर्द का इज़हार हम यारो

दीवानगी में जाने क्या-क्या हैं गुल खिलाये
अपने ही हाथों हो गए बेकार हम यारो

दुनिया के ताने शिकवे, सुन-सुन के मर गए हम
ज़िन्दगी तंज़ की झंकार है यारो

अब तो खुदा बुला ले अपनी पनाह में
ज़िन्दगी से ज़िन्दगी बेज़ार है यारो

OOO

यादों की सौगात

याद अपनी हमसे ले जाओ
अब तो रोया भी नहीं जाता है
दिन कटा
शाम आ गई
रात आ गई
साथ में
यादों की बारात आ गई
टूटे सपने
छूटे अपने
सब लुटा
क्यों सताने के लिये
रात आ गई
ज़िन्दगी के फूल
मुरझाये सभी
साथ में काँटों की
सौगात आ गई
दाग़ रंजो-ग़म का
गहरा हो रहा
अब तो धोया भी नहीं जाता है
करवटें बदला किये हम रात भर
अब तो सोया भी नहीं जाता है

○○○

भारत माता की बेटी

नहीं चाहिये गुड्डा गुड़िया
नहीं चाहियें मुझे खिलौने
माँ मेरे मन में जागे हैं
नए अलग से स्वप्न सलोने
सुना पड़ोसी एक हमारा
हम पर गोली बरसाता है
भाई-भाई का नारा देकर
हमसे धोखा कर जाता है
गोद करी माता की सूनी
सूना करा दुल्हन का माथा
बहुत सुन चुकी हूँ मैं अब तक
उस अत्याचारी की गाथा
माँ अब चूड़ी नहीं चाहिये
मुझे एक बन्दूक मँगा दे
केसरिया बाना पहना दे
मेरे माथे तिलक लगा दे
मेरी प्यारी भारत माँ को
जो देखेगा आँख उठाकर
उसको सबक़ सिखाना मुझको
उसकी उठती आँख झुकाकर
मैं भारत माता की बेटी
रानी झाँसी बन जाऊँगी
हाथों में बन्दूक उठाकर
दुश्मन से लड़ने जाऊँगी

○○○

प्रार्थना

मेरे होठों पे अब आई है दुआ ये भगवन
ज्योति सी जलती रहूँ ऐसा मेरा हो जीवन
जल के मैं दूर करूँ तम जो घिरा है सब ओर
मैं जलूँ और करूँ जल के उजाला सब ओर
मैं अँधेरों को मिटा दूँ मैं हटा दूँ तम को
अच्छे रस्ते पे चलें एक ये वर दे हमको
न कोई दीन दुखी होवे न बीमार कोई
न निराशा के अँधेरे में तजे संसार कोई
मैं झुका सिर तेरे दर पर यही माँगूं तुझसे
भूल से भी न मिले दर्द किसी को मुझसे
सबका कल्याण हो सब खुश रहें आबाद रहें
मेरा भारत रहती दुनिया तलक आज़ाद रहे
प्रेम से रहते रहें मेरे ये भारत के जन गण
न लड़े कोई भी आपस में न होवे अनबन
मेरे होठों पे अब आई है दुआ ये भगवन
ज्योति सी जलती रहूँ ऐसा मेरा हो जीवन

OOO

कर्मपथ

कर्म करना धर्म है
गीता में प्रभु ने यह कहा
धर्म मेरा कर्म है
खुद से वचन मैंने लिया
आज मन में ठान अपने
कर्मपथ पर बढ़ चला
कर्म मेरा इष्ट है
मैं कर्मरथ पर चढ़ चला
अब प्रभु से विनय इतनी
शक्ति मुझको दे अटल
मैं डिगूँ न कर्मपथ से
भाव दे मुझको प्रबल
कोई भी लालच जगत का
मुझसे मेरा पथ न छीने
फल की इच्छा हो कभी न
कर्म कर लूँ भाव भीने
○○○

फ़ना के बाद भी

फ़ना के बाद भी मुझको न लेने चैन दिया
कभी दिन में तो कभी रात में बेचैन किया

तुम्हारी याद में कैसे जिया हूँ कैसे कहूँ
लगा हमेशा कि जी कर गुनाह मैंने किया

बसाये दिल में तेरी याद रात कैसे कटी
अँधेरी रात में पल-पल ज़हर हो जैसे पिया

ये चाँद सितारे भी रोये साथ मेरे
जब अपने दिल ने भी छोड़ा इन्होंने साथ दिया

तुम्हीं बताओ मेरे दोस्त क्या हुआ हासिल
लगाये ज़ख़्म जो खुद पे उन्हें है खुद ही सिया

वफ़ा का बदला किसी बेवफ़ा ने कैसे दिया
न दिन में न रातों को लेने चैन दिया

ooo

करो हिम्मत ज़रा

हर तरह के ज़ुल्म क्यों सहते हो तुम
क्या अजब हरकत मियाँ करते हो तुम
ये जो दुनिया है सतायेगी तुम्हें
मूर्ख पग-पग पर बनायेगी तुम्हें
हर तरह से तुमको लूटा जायेगा
हर तुम्हारा वार झूठा जायेगा
लोग चूसेंगे तुम्हारा ख़ून भी
खाना तक पाओगे न दो जून भी
ये तुम्हें जीने न देंगे चैन से
छीन लेंगे नींद तेरे नैन से
जागते में तो रुलायेंगे तुम्हें
सपनों में भी आकर डरायेंगे तुम्हें
है समय अब भी करो हिम्मत ज़रा
क्यों नहीं अपनी भी कुछ कहते हो तुम
हर तरह के ज़ुल्म क्यों सहते हो तुम
क्या अजब हरकत मियाँ करते हो तुम
OOO

कैसी ये मेरी ज़िन्दगी

जीना मुश्किल है बहुत
फिर भी तो जीना है मुझे
कैसी क़िस्मत ने बनाई है
ये मेरी ज़िन्दगी
कोई मंज़िल भी नहीं
खोई हैं राहें सारी
न है हमराज़ कोई
और न कोई साथी
बीच चौराहे खड़ा
देख रहा चारों तरफ़
कौन-सी राह पे जायेगी
ये मेरी ज़िन्दगी
सिर्फ़ तारीकियाँ हैं
कोई उजाला भी नहीं
कोई अपना भी नहीं
कोई पराया भी नहीं
ख़ाली दिल और दिमाग़
ख़ाली निगाहें मेरी
सूनेपन से क्यों भरी है
ये मेरी ज़िन्दगी
काँटे अपनों ने बिछाये हैं
मेरी राहों में
अब तो बस मौत ही छुपा ले
अपनी बाहों में
जीने की चाह नहीं, मरने की राह नहीं
कैसे दुनिया में कटेगी
कैसी ये मेरी ज़िन्दगी ○○○

जीने के लिये

बहाने बहुत ढूँढती हूँ जीने के लिये
पर सिर्फ़ अश्क ही मिलते हैं मुझे पीने के लिये

हर इक निगाह में ढूँढती हूँ थोड़ा-सा प्यार
हर इक आँख में ढूँढती हूँ थोड़ा-सा सुकून

हर इन्सान के जीवन में आ जाये बहार
यही है मेरा सिर्फ़ एक जुनून

किनारे बहुत से ढूँढती हूँ पहुँचने के लिये
पर भँवर ही मिलते हैं डूबने के लिये

भरी महफ़िल में अकेलेपन का अहसास
रहती सब चेहरों पे अनबुझी-सी प्यास

उधार की हँसी, पर आँखें उदास
सूना दिल माँग रहा कहीं से उजास

जाने कहाँ-कहाँ भटकती हूँ रौशनी के लिये
पर अँधेरे ही मिलते हैं मुझे जीने के लिये

ooo

या फिर मुझे बुला ले

अरमान कोई कैसे अपने यहाँ निकाले
जब हों पड़े ज़बाँ पर ख़ामोशियों के ताले

किसको समय है रुक कर सुन ले मेरी कहानी
सुनकर छुपा ले दिल में है किसका दिल यूँ ख़ाली

सबके ही दिल हैं घायल सबके ही दिल हैं ज़ख़्मी
किसको कोई बचाये सबको पड़ी है अपनी

घावों से दिल के रिसता बनकर लहू भी पानी
हर बूँद से लहू की, बनती है इक कहानी

चुपचाप कब तलक दिल, रोता रहे यूँ मेरा
ख़ामोशियों का दिल पर, कब तक रहेगा पहरा

मैं डगमगा रही हूँ, सब ख़त्म हो रहा है
सहने की हद से बाहर, अब दर्द हो रहा है

है कौन ऐसा आकर, गिरते को अब सँभाले
मेरा ख़ुदा तू आजा, या फिर मुझे बुला ले

OOO

विधाता की रीत

अपने आप से लड़कर
अपने आप को जीतना
जीवन की सबसे बड़ी जीत है
हर जीव का जीवन
उसका अपना होता है
अपने जीवनरूपी रथ का रथी
वह स्वयं होता है
उस रथ की बागडोर
वह स्वयं अपने हाथों में लेकर चले
साम दाम दण्ड भेद
सबका प्रयोग पहले
अपने हृदय और मस्तिष्क पर करे
अविवेक को विवेक से जीतना ही
जीवन की सबसे बड़ी जीत है
वर्तमान से तालमेल करे
भविष्य की चिन्ता
आदि शक्ति पर छोड़ दे
जो बीत गया चला गया
अतीत तो अतीत है
सबको यथाविधि यथास्थान रखकर जीना ही
जीवन की सबसे बड़ी जीत है
स्वयं को जीते बिना
दूसरों पर विजय पाना असंभव है
यही विधाता की रीत है

○○○

विद्यालय

विद्यालय
विद्या की देवी सरस्वती का पूजा स्थल
केवल ईंट गारे का बना एक मकान नहीं
केवल विद्या बेचने की एक दुकान नहीं
वह विद्यालय नहीं
जिसमें विद्या की देवी का आह्वान नहीं
वह विद्यालय नहीं
जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्मान नहीं
विद्यालय पढ़े लिखे लोग निकालने का कारखाना नहीं
विद्यालय दौलत बनाना सिखाने का
या घमंड के नशे में रहना सिखाने वाला मयख़ाना नहीं
विद्यालय है मानव को मानव बनाने का स्थल
विद्यालय है चरित्र और व्यवहार को ऊँचा बनाने का सम्बल
विद्यालय की एक-एक ईंट में ब्रह्मा विष्णु महेश का निवास है
विद्यालय के कण-कण में देवी सरस्वती का वास है
उसी देवी के नाम की आओ आज शपथ लें
शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही
विद्यालय, देश, समाज और संसार को
आदर्श बनाने के पथ पर चलें

OOO

उस एक की कमी

कभी-कभी भरी भीड़ में भी
किसी एक की कमी का अहसास
कितना अकेला बना देता है
वह एक
जो मुझ शून्य को
अपने आगे लगाकर
मुझे दस बना देता है
उसका पास में न होना
मुझे कितना बेबस बना देता है
उसके बिना सारे रिश्ते नाते
हमदर्दियों की बातें
सबकुछ कितना बेमानी लगता है
भीड़ का हर आदमी अनजाना
और अपना साया भी पराया लगता है
जिसके बिना सूखती नहीं
आँखों की नमी
हज़ारों में अकेले बना देती है
उस एक की कमी
○○○

प्रलय राग

बीच भँवर में डूब रही है जीवन नैया
दूर दूर तक नहीं किनारा
और नहीं है कोई खिवैया
न कोई है संगी साथी
न कोई है सखी सहेली
कैसे सुलझे उलझन मेरी
जीवन तो बन गया पहेली
किससे मन के सुख दुख बाँटूँ
किसको मन की कथा बताऊँ
नहीं जहाँ में कोई ऐसा
जिसको अपनी व्यथा सुनाऊँ
कोई राह नहीं दिखती है
चारों तरफ़ अँधेरा छाया
जीवन मेरा रात अँधेरी
जिसका नहीं सवेरा आया
मेरी इच्छायें हैं सोईं
अरमानों पर पहरा बैठा
बहुत पुकारा है ईश्वर को
वही भी बन कर बहरा बैठा
बाँध निराशाओं का टूटा
अब अन्तर में क्रोध उठ रहा
बहुत लगाये ताले मन पर
अब मन में विद्रोह उठ रहा
अब तो प्रलय राग गायेगा
मेरे मन का सुप्त गवैया
दूर-दूर तक नहीं किनारा
और नहीं है कोई खिवैया ०००

नये युग का सर्जना

शस्य श्यामल मातृ भू को सिर झुकायें
आ गया है वक़्त अब हम जाग जायें
वक़्त के धोखे न अब आकर सतायें
अब कोई जयचंद न फिर सिर उठाये
सब विवादों को भुला दें दिल से अपने
सुख समृद्धि शान्ति के पूरे हों सपने
जाति भाषा धर्म की परिभाषा नई हो
हृदय से बस एक ही आवाज़ आए
मातृ भू की शान में हम जाँ लुटायें
कोई हिन्दू, सिक्ख, मुस्लिम न ईसाई
भारती के पुत्र सब हैं भाई-भाई
हम रहें मिलकर चलें मिलकर ख़ुशी के गीत गायें
प्रेम के सम्मान की भाषा पढ़ें सबको पढ़ायें
एक ही धरती गगन है एक ही सब एक हैं हम
उच्च हैं आदर्श ऊँची भावनायें नेक हैं हम
हम धरा के पुत्र दुनिया को दिखा दें
विविधता में एकता सबको सिखा दें
वक़्त की आवाज़ है बढ़ते रहें हम
मातृ भू की वंदना करते रहें हम
सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते रहें हम
नये युग की सर्जना करते रहें हम
OOO

मधुर सपना

ज़िन्दगी में लाख तूफ़ानों को सहना
पर असम्भव शब्द तुम मुख से न कहना
क्या कभी तूफ़ान कोई ज़िन्दगी भर को अड़ा है
उसको इक दिन हार कर जाना पड़ा है
अनगिनत बाधायें आयें पर कहीं तुम रुक न जाना
देखकर कठिनाइयाँ तुम झुक न जाना
लक्ष्य पथ पर चल पड़ा जो रोक पाया कौन उसको
है अगर दृढ़ इच्छाशक्ति रोकने का है भला अधिकार किसको
प्रेरणा लेते रहो हरदम बुज़ुर्गों से तुम अपने
एक दिन हो जायेंगे पूरे तुम्हारे मधुर सपने
जो कभी झुकते नहीं बाधाओं तूफ़ानों के आगे
वो अकेले चल पड़े पर लोग पीछे उनके भागे
प्यार देकर प्यार लेकर तुम बना लो सबको अपना
फिर भला कैसे अधूरा रह सकेगा मधुर सपना
○○○

ईश्वर का नामकरण

कौन हैं ये लोग
जो बाँट रहे हैं हमें
धर्म, जाति, अमीर, ग़रीब या ऊँच-नीच में
क्यों खड़ी कर रहे हैं ये दीवारें हमारे बीच में
ये टुकड़ों में नहीं बाँटते सिर्फ़ इन्सान को
ये अलग-अलग घरों में बंद कर देते हैं भगवान को
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में
गिरजाघर की मीनारों में
करते हैं नामकरण अपने-अपने भगवान का
ईश्वर भी हँसता देख साहस इन्सान का
इनका धर्म निहित है केवल मात्र स्वार्थ में
करते हैं दिखावा जैसे व्यस्त हैं परमार्थ में
वक़्त रहते हम इनकी नीयत पहचान लें
अपनी आत्मा में निहित परमात्मा को जान लें
वरना ये लोग हम में फूट डालकर
अपना स्वार्थ साधते रहेंगे
अपने-अपने ईश्वर के साथ
हमको बाँधते रहेंगे
आओ कर लें हम एक परमात्मा का वरण
कैसे कर सकते हम ईश्वर का नामकरण
OOO

नया कलेवर

जीवन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में
मौत और ज़िन्दगी दोनों एक हैं
दोनों के लक्ष्य नेक हैं
ज़िन्दगी जी कर कुछ नया करती है
ज़िन्दगी मर कर भी कुछ नया करती है
मौत आकर ज़िन्दगी को
एक नई शक्ल में
एक नई ज़िन्दगी देती है
एक नई राह, एक नया लक्ष्य
एक परिवर्तन देती है
एक नया जीवन दर्शन देती है
कहीं कोई सो गया कहीं कोई गा उठा
मौत सोई ज़िन्दगी को
एक नई सुबह देती है
थकी हारी जीर्ण-शीर्ण ज़िन्दगी को
एक नया कलेवर देती है
○○○

दिनकर

जब खुला उषा का अवगुँठन
नवकलियों ने ली अँगड़ाई
बिखरीं निखरीं किरणें चहुँदिशि
सूरज में आई तरुणाई
जग में आया फिर नवप्रभात
जगमग-जगमग घर द्वार सभी
अँधियारे से बाहर आकर
अब जाग गए नर-नार सभी
सूरज निकला सब व्यस्त हुए
सब कर्म करें अपने-अपने
सूरज की सतरंगी किरणें
ले आतीं सतरंगे सपने
उन सपनों को पूरा करने
सब निकल पड़े अपने घर से
दो हमें शक्ति दो हमें भक्ति
पायें प्रकाश तेरे देर से
सब करें सूर्य को नमस्कार
सब करें प्रार्थना इक स्वर से
हम अन्धकार से चलें ज्योति की ओर
सभी करबद्ध कह रहे दिनकर से

OOO

ये रिश्तेदार

हवा में आ रही है महक कुछ जलने की
शायद मिलने आ रहे हैं कुछ रिश्तेदार
उन्होंने प्यार से ज़ख़्मों को सहलाया तो क्यों ऐसा लगा
जैसे नमक लगा रहे हैं ये रिश्तेदार
ये कैसी खुनकी सी बढ़ चली हवाओं में
क्या कोई नई आग ला रहे हैं ये रिश्तेदार
हमारे ख़ून के रिश्ते अचानक टूट जाते हैं
क्यों उन्हें तोड़ने आ जाते हैं ये रिश्तेदार
क्यों कभी छोटी सी ग़लतफ़हमी से
पीढ़ियों के रिश्ते तोड़ देते हैं ये रिश्तेदार
जब दुश्मन भी दोस्त बन सकते हैं
तो अपने क्यों नहीं बने रहते ये रिश्तेदार
दूर हों तो मिलने की दुआयें करते हैं
पास आयें तो क्यों लड़ बैठते हैं ये रिश्तेदार
क्यों नहीं रहते हैं मिलकर ये माला के मनकों की तरह
क्यों टूट के बिखर जाते हैं ये रिश्तेदार

OOO

सब रूठ गए

गई रात देखे कुछ सपने
सुबह हुई सब टूट गये
उन सपनों में जो थे अपने
जब नींद खुली सब रूठ गये
पल भर में दिल का आईना
किरच-किरच बन बिखर गया
लगे फूल भी पत्थर बनकर
शीशे का दिल जिधर गया
दिल में छुपे हुए थे छाले
पत्थर खा कर फूट गए
क़समें-वादे नेह प्रीत सब
बातें हैं दीवानों की
यही बना देते जीवन को
हैं बस्ती वीरानों की
जो धागे बाँधे थे पक्के
कच्चे बनकर टूट गये
दिन बदले हफ़्तों में
महीने बरसों में तब्दील हुये
आँसू से ये दोनों नैना
नदियाँ, सागर, झील हुये
वही रेत से छूट गये
गई रात जो सपने देखे
सुबह हुई सब टूट गये

○○○

अतीत का पन्ना

शाम से मन कुछ अनमना था
वातावरण भी कुछ गुनगुना था
शायद अन्दर कोई
अतीत का पन्ना खुल गया था
शायद उसका ही विष
अन्तर में घुल गया था
धीरे-धीरे अन्दर बाहर
सब तरफ़ छा गया अँधेरा
एक घुटन सी हो रही थी
कब आयेगा सवेरा
क्यों अतीत की खिड़कियों से झाँक-झाँक कर
भूले बिसरे लोग करते हैं परेशान
क्यों इस ताक झाँक से
बच नहीं पाता इन्सान
काश जलते सूरज से
अतीत का यह पन्ना जल जाये
काश किसी तेज़ बारिश से
इस पर लिखा धुल जाये
काश एक बार फिर जीवन में
आ जाये उजियारा
भविष्य की किसी सुनहरी किरण से
मिट जाये अतीत का अँधियारा
 OOO

धरती बने निराली

आओ काम करें कुछ ऐसे
जिनसे जग में हो ख़ुशहाली
हरी भरी धरती बन जाये
मन के अन्दर हो हरियाली
सबसे पहले जले हृदय में
देशप्रेम की पावन ज्वाला
भारत माँ के बेटे हैं हम
इस धरती ने हमको पाला
भारत माँ के बेटे हम सब
फिर कैसा यह भेदभाव है
क्यों हम सबके मन के अन्दर
स्नेह एकता का अभाव है
ऊँच, नीच, निर्धन, धनवाला
ज़ात-पात के भेद छोड़ दो
मानव हो तो दिल दिमाग़ को
मानवता की ओर मोड़ दो
एक ईश है सबके दिल में
किसी नाम से उसे पुकारो
फिर क्यों लड़ें धर्म के पीछे
अपने मन में ज़रा विचारो
एक आत्मा सबके भीतर
सबमें एक ख़ून की लाली
फिर क्यों काम करें हम ऐसे
जिनसे हो जाये बदहाली
ख़ुश हो घर परिवार देश सब
अपनी धरती बने निराली
आओ काम करें कुछ ऐसे
जिनसे जग में हो ख़ुशहाली ○○○

क़दम रुक न जायें

चला चल चला चल चला चल अकेला
ये दुनिया है मेला मगर तू अकेला
भरी भीड़ में तू पुकारेगा किसको
न कोई सुनेगा सुनायेगा किसको
उखड़ जायें गे पाँव तेरे धरा से
जो पीछे से भीड़ों का आयेगा रेला
न रुकना कहीं पथ पे बढ़ता चला जा
नई मंज़िलों पर तू चढ़ता चला जा
निगाहें सदा लक्ष्य पर ही तू रखना
कभी मुड़ के पीछे नज़र से न तकना
कहीं कुछ कहे मन क़दम रुक न जायें
कहीं छूट जाये न अवसर सुनहला
हैं काँटे ही काँटे तेरे पथ में राही
मगर भाग्य पर रख भरोसा तू राही
अगर फेर लें मुख तेरे हमसफ़र भी
तुझे घेर लें ज़िन्दगी के क़हर भी
रहेगा तेरा विश्वास ही साथ तेरे
न ख़ुद को समझना कभी तू अकेला
चला चल चला चल चला चल अकेला

ooo

आ रहे भगवान दिनकर

एक सुन्दर रथ सजाकर
सात घोड़ों को लगाकर
बादलों की सैन्य है संग
वस्त्र स्वर्णिम सज रहे अंग
है प्रकाशित पथ किरण से
कमल विकसित हो विहँसते
आ रहे भगवान दिनकर
दृश्य है स्वर्गीय सुन्दर

स्वर्ण सागर में है बिखरा
प्रकृति का हर रूप निखरा
कीर्ति उसकी गा रहे खग
है प्रकाशित जिससे यह जग
चाँद तारे भागे डर कर
आ रहे भगवान दिनकर
दृश्य है स्वर्गीय सुन्दर

आ गया उज्जवल सवेरा
भागा अँधियारा घनेरा
उड़ी अँधियारे की चादर
पनिहारिनें भर लाईं गागर
भरा नवजीवन है घर-घर
आ गए भगवान दिनकर
दृश्य है स्वर्गीय सुन्दर

OOO

हमें प्यार अपनी माटी से

हम भारत माता के बेटे
किसी के रोके नहीं रुकेंगे
नहीं किसी से हम हैं हेठे
कोई झुकाये नहीं झुकेंगे

आँधी तूफ़ानों से डर कर
अपना पथ हम न छोड़ेंगे
प्राकृतिक विपदायें आयें
पर न कभी हम मुख मोड़ेंगे
सदा लक्ष्य तक बढ़े चलेंगे
किसी के रोके नहीं रुकेंगे

शत्रु भय दिखलाये कितना
हम सब मिलकर एक रहेंगे
हम में फूट डाल दे कोई
ऐसा अवसर कभी न देंगे
प्रेम मित्रता नहीं तजेंगे
किसी के रोके नहीं रुकेंगे

घाटी वादी ऊँचे पर्वत
राह हमारी न रोकेंगे
नदियाँ नाले झरने सागर
सबके दिल में गीत भरेंगे
इनसे प्रेरित सदा रहेंगे
किसी के रोके नहीं रुकेंगे

हमें प्यार अपनी माटी से
वन कानन सब हरे रहेंगे
आया शत्रु अगर कोई तो
लाल रक्त बलिदान करेंगे
अपनी भारत माँ की धरती
नहीं किसी को छूने देंगे ○○○

वीर बढ़ते ही चलो

वीर बढ़ते ही चलो तुम
लक्ष्य कितने उच्च हों पर
लक्ष्य तक चढ़ते चलो तुम
वीर बढ़ते ही चलो तुम

कितने नदियाँ सागर आयें
बादल घने घनेरे छायें
कड़क बिजलियाँ तुम्हें डरायें
मेघ मूसलाधार बहायें
छा जाये चहुँदिशि अँधियारा
लगे न अब होगा उजियारा
लगे सवेरा कल न होगा
विपदाओं का ताण्डव होगा

चाहे आकर शेर दहाड़ें
काले नाग भरें फुँकारें
वीर न लेकिन तुम डर जाना
कहीं न भय से तुम भर जाना
देश का ध्वज न झुकने देना
अपने क़दम न रुकने देना
चंद्र से चमके चलो तुम
सूर्य से चढ़ते चलो तुम

वीर बढ़ते ही चलो तुम
लक्ष्य तक चढ़ते चलो तुम

ooo

बरसी मूसलाधार

झम-झमाझम झम-झमाझम
बरसे बादल काले
छम-छमाछम छम-छमाछम
नाचे गोरे काले
झर-झरर-झर झर-झरर-झर
बरसी मूसलाधार
गली मोहल्ला कुछ न छोड़ा
न कोई घर द्वार
जंगल-जंगल वन उपवन में
पर्वत-पर्वत जाकर
काले बादल ने जा उलटी
अपनी सारी गागर
कूक लगाई कोयलिया ने
मोर झूमकर नाचा
बजी मुरलियाँ दूर कहीं
और ठुमक उठी हर राधा
ऐसी पींग बढ़ी सखियों की
इन्द्रधनुष ज्यों झूले
सावन के गीतों की धुन सुन
सब अपने दुख भूले
धरती की हरियाली ने कुछ ऐसे डोरे डाले
भूल गये मर्यादा अपनी सब नदियाँ और नाले
उफन-उफन कर आये सुनने वो तीजों के गाने
क्या हैं देखे कभी किसी ने ऐसे सुनने वाले
ढम-ढमाढम ढम-ढमाढम बाजे ढोल नगाड़े
छम-छमाछम छम-छमाछम नाचे गोरे काले

OOO

लहराये तिरंगा लहराये

लहराये तिरंगा लहराये
फहराये तिरंगा फहराये
डण्डे पर लगा हुआ झण्डा डण्डे पर लहराये झण्डा
भारत ध्वज फहर-फहर फहरे झण्डे की लहर-लहर लहरें
सबके मन को हैं भरमायें
लहराये तिरंगा लहराये
केसरिया वीरों का रंग है और हरा रंग हरियाली का
है मध्य भाग में श्वेत रंग देता सन्देशा शान्ति का
नीले रंग का ये अशोक चक्र
श्रम की शिक्षा देता जाये
लहराये तिरंगा लहराये
लहराते ध्वज को जब देखें भारत माँ याद आ जाती है
दिल देश प्रेम से भर जाता इक नई चेतना आती है
बलिदान देश पर हो जायें
अपना ध्वज न झुकने पाये
लहराये तिरंगा लहराये
भारत के जन-जन के मन में हो देशप्रेम हो देशभक्ति
जन गण मन के शुभ कर्मों से बन जाये भारत विश्वशक्ति
उतना ही ऊँचा नाम रहे
जितना ऊँचा ध्वज फहराये
लहराये तिरंगा लहराये
अम्बर से ऊँचा लहराये

०००

न सुने दर्द न कहे कोई

कोई कितना क़रीब होता है
ये तो अपना नसीब होता है
हम तो अपना सभी को कहते हैं
रिश्तों के ज़ख़्म सारे सहते हैं
उनमें कितने हैं दोस्त या दुश्मन
अपना-अपना सलीब होता है
किसके काँधे पे रोयें सिर रखकर
हम यक़ीं भी करें तो किस-किस पर
जाने कौन आस्तीं का साँप मिले
जाने कौन सच हबीब होता है
दिल की बातें तो दिल ही जाने है
ये तो बस सिर्फ़ अपनी माने है
कब किसी पर लुटा दे सब अपना
दिल भी कितना अजीब होता है
जिसका अपना कहीं नहीं कोई
न सुने दर्द न कहे कोई
भीड़ में भी अकेला रहता है
वो भी कितना ग़रीब होता है
ज़िन्दगी में कोई कितना क़रीब होता है
ये तो इन्सान का अपना नसीब होता है
ooo

न सुने दर्द न कहे कोई

एक मधुर संगीत है जीवन
मन में छुपी प्रीत है जीवन
आँखों से आँसू न बहाना
यह जीवन है बहुत सुहाना
दुख से कभी नहीं घबराना
दुख सुख तो है आना जाना
सच्चाई से न शरमाना
बात न्याय की कहते जाना
अन्यायी से न डर जाना
ग़लत बात से न झुक जाना
बीच राह में न रुक जाना
सदा लक्ष्य पर बढ़ते जाना
ऊँचाई पर चढ़ते जाना
एक अनोखी जीत है जीवन
एक मधुर संगीत है जीवन
आपस में तुम स्नेह बढ़ाना
राह दिलों के बीच बनाना
कभी वैर की बात न करना
पाठ एकता का तुम पढ़ना
मधुर हँसी से जग को रिझाना
कभी किसी को न बहकाना
कभी दूसरों पर न हँसना
बुरे काम से सदा ही बचना
पक्षी से तुम सदा चहकना
फूलों से तुम सदा महकना
निर्मल कोमल बच्चों के मन, उन सा पावन गीत है जीवन
एक मधुर संगीत है जीवन, मन में छुपी प्रीत है जीवन

बरसों तलक क्यों

कभी भुलाया तुम्हें कभी बुलाया तुम्हें
तुम्हारे नाम ने हरदम बहुत सताया हमें
तुम्हारी यादों के जंगल में खोये रहे
तुम्हारे सपनों की दुनिया में सोये रहे
कुछ एक पल जो कभी साथ तेरे जिये
उन पलों ने हमें दर्द रंजो-ग़म दिये
कभी हँसाया हमें कभी रुलाया हमें
तुम्हारे नाम ने हरदम सताया हमें
ख़ुदा गवाह हम कुछ नहीं हैं तुम्हारे बिना
नहीं फिर भी है दोस्त हमको तुमसे गिला
चलन है दुनिया का अपने ही तो सताते हैं
याद आके रात दिन जान वो जलाते हैं
बेवफ़ाई ने तेरी उम्र भर जलाया हमें
तुम्हारे नाम ने हरदम बहुत सताया हमें
चाँद तारों से कहा आसमाँ वाले से कहा
दिल के ज़ख़्मों ने कहा आँख के अश्कों ने कहा
रात की स्याही से दिल के अँधेरों को बाँटा
तारे गिन-गिन के रात को काटा
बरसों तलक क्यों रातों को जगाया हमें
तुम्हारे नाम न हरदम बहुत सताया हमें

OOO

नये ख़्वाब

गर तुमने कभी देखे होते कुछ ख़्वाब हमारी आँखों में
मिल जाते सारे प्रश्नों के वो जवाब हमारी आँखों में
जब दिल से दिल की राह बने
इक डोर दिलों में बँध जाती
जब फूल दिलों में खिलते हैं
इक माला सी है गुँथ जाती
चेहरे पे नक़ाब लगाने से
दिल में बदलाव नहीं आता
कुछ रिश्ते होते रूहों के
जिनमें अलगाव नहीं आता
है नहीं ज़रूरी ख़ून के ही
रिश्ते सच्चे रिश्ते होते हैं
कुछ अनजाने, अनजाने में
मिलते जो फ़रिश्ते होते हैं
तुम कभी समझ न पाओगे
अंदाज़ हमारी आँखों के
तुम काश कभी तो पढ़ पाते
कुछ भाव हमारी आँखों के
तो जन्नत बन जाती ज़मीन
खिलते गुलाब इन आँखों में
लगता कि जैसे छुपा लिया हो
मुझे खुदा ने पाँखों में
दुनिया भर के सारे जवाब होते हैं हमारी आँखों में
जो पढ़ पाते तो भर देते नये ख़्वाब हमारी आँखों में

○○○

मिली जीवन रेखा

जीवन की सूनी राहों को
जब भी पीछे मुड़कर देखा
दूर-दूर तक सन्नाटा था
कहीं न थी जीवन की रेखा
जीवन के इस चक्रव्यूह में
फँसकर कोई निकल न पाये
जैसे डूबा बीच भँवर में
कोई थाह न जल की पाये
जैसे धँसता जाता कोई
नीचे से नीचे दलदल में
वैसे मानव फँसता जाता
जीवन की थोथी हलचल में
जैसे दबता जाये कोई
मरुथल की रेती के नीचे
कैसे फिर जीवन बगिया को
कोई अमृत जल से सींचे
यूँ ख़ामोश वीरानों में ही
कट जाता जीवन कब सारा
जान न पाये भोला मानव
क्या जीता उसने क्या हारा
इस सन्नाट से निकल सका जो
उसने कभी न पीछे देखा
वीरान ख़ामोशी कहीं न थी
हर ओर मिली जीवन की रेखा

ооо

न शिकायत कोई

न कोई तुमसे गिला और न शिकायत कोई
मैं तो बस अपनी ही तक़दीर को तक कर रोई

कहने को बहुत कुछ था तुमसे मगर कह न सके
कह न पाने का दुख भी तो मगर सह न सके

कितने जज़्बात निकल पाये न जो दिल से कभी
कैसे हालात सँभल पाये न जो हमसे कभी

कितने आँसू थे जो रात में चुपचाप पिये
दिल में जो ज़ख़्म थे ख़ुद अपने ही हाथों से सिये

जान न पाये कि दुनिया से लिया क्या और दिया क्या
ढूँढते थे कोई लम्हा है ख़ुशी से भी जिया क्या

एक सवाल जिसका जवाब न मिल पाया कभी
मैं तो हैरान हूँ क़िस्मत कहाँ जाकर सोई

न कोई तुमसे गिला और न शिकायत कोई
मैं तो बस अपनी ही तक़दीर को तक कर रोई

OOO

पथ जीवन धारा का

रोने से अगर दुख मिट जाते
तो सब रोते ही रहते
फिर संघर्षों में तप-तप कर
दुख दर्द भला हम क्यों सहते

किन्तु पथ जीवन धारा का
बन्धु कड़ा होता विचित्र
कुछ पता नहीं कब कोई शत्रु
कब कोई बन जाता है मित्र
कब कोई फूलों के बदले
दे काँटे हो जाता अदृश्य
फिर घनी निराशा के क्षण में
इक ज्योति प्रकट होती है दिव्य

विश्वासघात के बदले जो
विश्वास जगाती अन्तर में
घनघोर निराशा के बदले
इक आस जगाती है मन में
ऐसे ही जब-जब जीवन के
दुर्गम पथ पर डगमग होते हैं
दुख और नैराश्य की प्रतिमा बन
अपनी क़िस्मत पर रोते हैं

तब हमें प्रेरणा देने की
अपनी क़िस्मत से लड़ने को
हमको कोई मिल जाता है
जिसकी वाणी को सुनते ही
तन-मन में जीवन भरता है

पूछा ज़र्रे-ज़र्रे से

नहीं बोलते प्रियतम मुझसे, कैसे आये चैन पिया बिन
द्वार जिया के बंद कर लिए, कैसे काटूँ रैन जिया बिन
घर की दीवारों से पूछा दरवाज़ों के जोड़े हाथ
नहीं बताया पता पिया का कैसे पाऊँ उनका साथ
दूर गाँव में जाकर वह तो भूल गए घर द्वार सभी
मुझसे जैसे छूट गए हों जीवन के आधार सभी

घर-घर, दर-दर पूछा जाकर, पूछा ज़र्रे-ज़र्रे से
पर्वत घाटी जंगल वादी पूछा दर्रे-दर्रे से
परदेसी बन गए पियाजी न भेजी चिठिया पाती
न जानें बिरहिन की पीड़ा कैसे काटे दिन राती
सब जग घूमे मेरे ही घर का, रस्ता भूल गये कैसे
याद जिया में जब-जब जागे, मन में शूल लगे जैसे

लोग कहें वह है कण-कण में तीन लोक का है वासी
पर मैंने तो ढूँढ लिया सब मथुरा वृन्दावन काशी
जाऊँ जहाँ भी लोग करें हैं हँस-हँस कर मेरा उपहास
जो मिल जायें प्रियतम मुझको, हो जाये जीवन में उजास
वीराने सन्नाटे में दे मुरली की आवाज़ सुनाई
जंगल में मंगल रचता सा, देता मुझको वही दिखाई

कहीं मिले तो उसे बताऊँ, जीवन काटूँ तारे गिन-गिन
रूठ गई निंदिया भी मोसे, कैसे लागें नैन पिया बिन
नहीं बोलते प्रियतम मुझसे केसे आये चैन पिया बिन
कहें मैं सबके मन में बसता तू क्यों रोये पल-पल, छिन-छिन
मैं और तुम प्रियतम-प्रियतम कैसे रहेंगे इक दूजे बिन
पक्का नाता आत्मा और परमात्मा का नहीं किसी का ऋण

जीवन के साठोत्तर वर्षों में

हमारे पूर्वज सचमुच बहुत विद्वान थे
जिन्होंने जीवन को चार आश्रमों में बाँटा
और वानप्रस्थ तथा सन्याल आश्रम में जाने को बताया
वृद्धावस्था को निराशा और लज्जा से बचाया
आज वृद्धों को कुम्भ के मेले में, किसी सड़क के किनारे
किसी चौराहे पर, किसी को बताकर और किसी को बिना बताये
वृद्धाश्रम में अपने ही बच्चे धोखे स छोड़ आये
जो घरों में रहते हैं वे भी निष्कासित से होते हैं
अपने हाल पर चुपचाप छुप-छुप कर रोते हैं
घरों में वृद्धों को हो रहा है कठिन एक-एक दिन काटना
होता है मुश्किल दिन भर ख़ुद को टुकड़ों में बाँटना
अपने ऊपर कटौतियाँ करके बच्चों को पढ़ाया लिखाया
उनको पैरों पर खड़ा किया जीवन साथी ढूँढकर दिया
सेवानिवृत्ति होते ही साठ से इकसठ तक जाने से पहले ही
वह कुद ही दिनों में बेकार बुड्ढा कैसे हो जाता है
जीवन कितना अकेला कितना कष्टदायी हो जाता है
साठ वर्ष का होती ही नई-पुरानी पीढ़ी का अन्तर
यकायक अत्यधिक तीव्रगति से बढ़ जाता है
नई सोच पुरानी से कितनी अलग है
पुरानी सोच कितनी लाचार और बेकार है
माँ को रसोई और घर का काम नहीं आता
पिता को नाती-पोतों से बात करना उन्हें पढ़ाना नहीं आता
खाने पीने उठने बैठने पर कितने बंधन लग जाते हैं
बूढ़ों को मित्रों सहेलियों के सामने नहीं आना है
याद आती है 'चीफ की दावत' की वृद्धा माँ
जिसके खाँसने पर भी प्रतिबन्ध था
कहीं चीफ घर में एक बुढ़िया को न देख ले

घर की पुरानी मालकिन सीढ़ियों के नीचे कोठरी में
पिता बाहर के बरामदे में आराम करते हैं
कोई भाई माता-पिता को एक-एक बाँट लेते हैं
कितना मुश्किल हो रहा है एक बार फिर
नई ज़िन्दगी का क, ख, ग शुरू करना
सबको ख़ुश करना चाहने पर भी
किसी को ख़ुश न रख पाना
क्या बुढ़ापा आते ही इन्सान के अन्दर का
सारा ज्ञान समाप्त हो जाता है
साठ के बाद एक वृद्ध का अस्तित्व उसकी पहचान
और उसका आत्म सम्मान
सब समाप्त हो जाता है
जबकि बाहर उनके दफ्तर के पुराने साथी
किसी शिक्षक को उसके विद्यार्थी
आज भी मिलने पर हाथ जोड़कर नमस्ते करते हैं
कुछ आदर सहित चरण-स्पर्श करते हैं
कुछ मित्र आज भी गले मिलते हैं
फिर क्या हो जाता है कि
जो सबसे अधिक अपने
सबसे अधिक पास होते हैं
वही सबसे अधिक दूर हो जाते हैं
क्यों एक इन्सान के जीवन भर के सपने
अन्तिम समय में चकनाचूर हो जाते हैं
उसका किया हर कार्य उसका बोला हर शब्द
उसके सम्पूर्ण जीवन का सारा अनुभव
सब बेमानी हो जाता है
जीना सिर्फ़ एक लाचारी रह जाता है

क्या साठ के बाद इन्सान बिल्कुल नकारा हो जाता है
सबकुछ होते हुए, करते हुए भी बेचारा हो जाता है
उसे तरसना पड़ता है दो क्षणों के साथ के लिये
वह तरसता है दो पल की मीठी बात के लिये
बीमारी में थोड़ी हमदर्दी, सहानुभूति के दो शब्दों के लिये
पूरा दिन कट जाता है शायद कोई पूछ ले बीमारी का हाल
निराशा मिलने पर हो जाता है बेहाल
दिन भर की आशा निराशा रात भर सोने नहीं देती
जीवन भर आत्मसम्मान से जीने की यादें जी भर रोने भी नहीं देतीं
जब नई पीढ़ी की नई पीढ़ी आयेगी
तब क्या हमारी यह नई पीढ़ी हमें याद करेगी
हमारी कामना-आशीष है कि उन्हें हमारे हाल से न गुज़रना पड़े
न उन्हें अपने किये पर पछताना पड़े क्योंकि तब हम न होंगे
और वे अपनी ग़लती सुधारना चाहकर भी न सुधार पायेंगे
चाहकर भी कोई प्रायश्चित न कर पायेंगे

OOO

अधूरे सपनों से आगे

आज वर्षों बाद उसने अपने लिये सोचने का वक़्त कैसे निकाल लिया
वह स्वयं हैरान परेशान है क्यों स्मृतियों के बंद झरोखों के पट
आज अचानक ही खुलने लगे हैं
जो समय पंख लगाकर न जाने कब उड़ गया था
क्यों वापिस आकर झकझोरने का प्रयास कर रहा है
याद आये वो सपने जो साकार होने से पहले ही टूट गये
मुँह चिढ़ाने लगे वो अपने जो अकारण ही रूठ गये
बड़े यत्नपूर्वक संजोये सपने कोरे कागज़ की तरह कोरे ही रह गये
सारे सपने आँखों के रास्ते बह गये
आज बरसों बाद उसने स्वयं पर दृष्टिपात किया
जैसे खुद को पहचानने का प्रयास कर रही थी
भागकर दर्पण से पूछा, उसने भी पहचानने से इन्कार कर दिया
भाग्य ने यह कैसा आघात दिया
अचानक ही स्मृतियों के बंद झरोखों से झाँकी वह लड़की
माँ-पापा की आँखों की पुतली, उछलती कूदती चंचल तितली
स्कूल कॉलेज की सखियों की प्यारी सहेली
मेधावी छात्रा जो आँखों में हज़ारों सपने लेकर आगे बढ़ने चली थी
एक नया समाज गढ़ने चली थी
वह अवाक थी उसका जीवन क्यों बनकर रह गया एक पहेली
उसने निश्चय कर लिया अपने जीवन पर पड़ी धूल साफ करने का
एक बार फिर ज़िन्दगी जीने का अपने सपनों को साकार करने का
हाँ अभी भी चीज़ों में वही ताज़गी वही सौन्दर्य शेष है
मेरा जीवन भी तो अभी शेष है
मुझ कोरे कागज़ में छुपे मेरे सपनों में
एक बार फिर से नये रंग भरने हैं
मुझे अपने अधूरे लक्ष्य पूरे करने हैं

ख़ुद से ही थक गये हम

कैसी ये बेबसी ये लाचारियाँ हमारी
कोई समझ न पाया मजबूरियाँ हमारी
हम तो नहीं हैं दुश्मन अपनी ही ज़िन्दगी के
फिर भी सितम क्यों करते हम अपनी ज़िन्दगी पे
पल-पल पे ख़ुद को रोका पल-पल पे ख़ुद को मारा
फिर भी ख़ुदा न आया बनकर मेरा सहारा
कह-कह के ख़ुद की बातें ख़ुद ही से थक गये हम
कोई न बाँट पाया तन्हाइयाँ हमारी
चाहा था ज़िन्दगी से थोड़ा-सा प्यार हमने
ऐसा भी क्या था माँगा इतना उधार हमने
हमने भी जीना चाहा था ज़िन्दगी के कुछ दिन
सोचा नहीं कटेगी ये चाँद तारे गिन-गिन
फिर चाँद तारों ने भी दे दी अँधेरी रातें
कुछ और बढ़ गईं तब तारीकियाँ हमारी
सबको दिये उजाले ख़ुद सह लिये अँधेरे
अपने लिये समेटे बादल घने घनेरे
कुछ प्यार सबसे चाहा कुछ प्यार सबमें बाँटा
फिर क्यों चुभाया सबने यूँ हमारे दिल में काँटा
जिन पर लुटा दी हमने अपनी ये ज़िन्दगानी
क्यों वे समझ न पाये कुर्बानियाँ हमारी
माँगीं बहुत दुआयें माँगा किये थे मन्नत
थोड़ा-सा सुख था माँगा माँगी नहीं थी जन्नत
हम तो बहुत थे कायर हम बन न पाये अपने
हम ख़ुश रहे हमेशा ठुकरा के अपने सपने
क्यों अपने भी हमारे कमज़ोर इतने निकले
क्यों दूर कर न पाये वीरानियाँ हमारी

आसमान में शोर मचा री

घिर आई बदरिया कारी
आसमान में शोर मचा री

कहीं चमक चम बिजुरी चमकी
कहीं ढमक ढम ढोलक ढमकी
कहीं गरजे काले बादल
जैसे आये लगाके काजल
कभी लगे बजते हैं नगाड़े
कभी लगे फूटे हैं पटाखे
कभी झिमिर झिर झरतीं बूँदें
कभी छमाछम बरसीं बूँदें
कभी लगा फट गये हैं बादल
आसमान की फूटी गागर
कभी मूसलाधार बरसते
नदियाँ ताल तलैयाँ सागर
खाई खादर सबको भरते
बरस-बरस कर जब थक जाते
डालें आसमान में झूला
सतरंगा वो इन्द्रधनुष
जिसे देख सब खुश हो जाते
चिल्लाते वाह इन्द्रधनुष

धरती आसमान दानों में
माया का सा जाल रचा री
घिर आई बदरिया कारी
आसमान में शोर मचा री

ooo

हम ख़ुद के हाथों छले गये

यादों के पक्के धागों की
उलझन में उलझते चले गये
कैसे सुलझायें हम उलझन
हम तो ख़ुद से ही छले गये
साँसों की लय पर गाते थे
हम रोज़ तराने यादों के
रातों में सपने आते थे
कुछ क़समों के कुछ वादों के
ढूँढा करते थे बीते दिन
हम आसमान के तारों में
अपनी क़िस्मत पढ़ते रहते थे
हम सूरज चाँद सितारों में
यादों की बारातों के संग
ख़ुद को बहलाया करते थे
जो याद आते थे हम उनकी
यादें सहलाया करते थे
पर आज हमें अहसास हुआ
क्या पाया हमने यादों से
क्यों ख़ुद को धोखे में रखा
झूठी क़समों और वादों से
जाने वालों ने चुपके से
मुँह को फेरा और चले गये
हम उलझे उनकी यादों में
ख़ुद के ही हाथों छले गये

ooo

प्रभु तुम्हारे बिना

कटेगी कैसे ये ज़िन्दगी तुम्हारे बिना
करेंगे किसकी हम बन्दगी तुम्हारे बिना

तुम्हारे नाम का लेकर सहारा जीते हैं
तुम्हारे प्रेम का अमृत ही रोज़ पीते हैं
नहीं तो ज़िन्दगी में और क्या है तुम्हारे बिना

हमारी ज़िन्दगी तो ग़म का इक तराना है
जो तुम नहीं तो दुश्मन ही ये ज़माना है
है कौन हमारा अपना प्रभु तुम्हारे बिना

तुम्हारी याद के दीपक जलाये रहते हैं
दिल और दिमाग़ को तुम पर लुटाये रहते हैं
कहो तो कैसे जिये कोई फिर तुम्हारे बिना

कुछ इस तरह निसार तुमपे दिल हमारा है
तुम्हारा नाम ही समन्दर का इक किनारा है
करेगा पार हमें कौन फिर तुम्हारे बिना

हमारी साँस की सरगम पे नाम तेरा लिखा
हमें जो तू न मिला ज़िन्दगी में क्या है रखा
हमें न चाहिये कुछ भी प्रभु तुम्हारे बिना

OOO

जीने का मक़सद

चारागर तू ही बता दे मेरी जीने का मक़सद
जब इलाज करके तू ही लाइलाज हो गया

कैसे मानूँ तेरी हालत का गुनहगार हूँ मैं
मैंने तो तुझसे कभी कुछ माँगा ही नहीं था

ज़िन्दगी के बहुत धोखे खा लिये हँस-हँस के हमने
लेकिन तेरा एक धोखा ज़िन्दगी को खा गया

मेरी क़िस्मत में न जाने क्या लिखा था क्या मिला
आज तक मैं इन सवालों में उलझता रह गया

मक़सदों में उलझना तो हर किसी का काम है
मैं बिना मक़सद के भी क्यों ज़िन्दगी जीता गया

गुत्थियाँ कितनी सवालों की सुलझतीं जो नहीं
जितना सुलझाया मैं उतना ही उलझता रह गया

ooo

सपनों की मायानगरी में

सपनों की मायानगरी में
तुम घूम रहे थे आँखों में
जब आँख खुली तुम कहीं न थे
हम ढूँढें सूनी आँखों से
पर कानों में तो अभी तलक
क़दमों की आहट गूँज रही
मेरा विश्वास असत्य नहीं
वह आहट सिर्फ़ तुम्हारी थी
मेरे मन के हर कोने में
केवल तुम ही रहते साथी
सपनों से बाहर आ जाओ
आँखों के सम्मुख ओ साथी
मन में जो बहुत सी बातें हैं
सब ही तो तुम्हें सुनानी हैं
तुम बिन जीवन कितना सूना
यह बात तुम्हें बतलानी है
सब ओर हवायें गरम-गरम
सब ओर उलझनें घेर रहीं
राहें सब बंद हुईं जैसे
है साँस-साँस की टेर यही
छूटी आशा टूटी हिम्मत
अब मुझे छुपा लो पाँखों में
जब आँख खुले पाऊँ तुमको
न ढूँढूँ सूनी आँखों में

OOO

कोई याद पुरानी सी

पिघल-पिघल कर दिल से निकली कोई याद पुरानी-सी
निकल-निकल कर पिघल-पिघल कर बन गई एक कहानी-सी

कितना चाहा याद करूँ न वो भूले-भूले नग़मे
जब-जब आते याद अचानक तब ही दे जाते सदमे
जाने झाँक-झाँक क्या जाता बंद झरोखे खुल जाते
पिछला जीवन जब आँका तो सबके धोखे खुल जाते
दहल-दहल कर छा जाती है मन में इक वीरानी-सी
पिघल-पिघल कर दिल से निकली कोई याद पुरानी-सी

माना जीवन रंगमंच है जिस पर हम खेला करते
परदे के पीछे से आते सुख-दुख को झेला करते
लेकिन खेल कभी बन जाता जीवन का असली साथी
जिसमें खेल-खेल जीवन भर तड़पें मछली के साथी
दिन और रात भरें बेचैनी अग्नि शाम सुहानी-सी
पिघल-पिघल कर दिल से निकली कोई याद पुरानी-सी

मरुभूमि में कभी-कभी इक मरुद्यान सा आ जाता
सूने-सूने जीवन में कुछ मधुर गान सा गा जाता
मिल जातीं कुछ खोई राहें बंद द्वार ज्यों खुल जाता
पथ प्रशस्त जो कर जाता जीवन में अमृत घुल जाता
एक बार फिर नई सुबह की ख़ुशी मिले अनजानी-सी
पिघल-पिघल कर दिल से निकली कोई याद पुरानी-सी
निकल-निकल कर पिघल-पिघल कर बन गई एक कहानी-सी

०००

ज़िन्दगी तो इक तमाशा

दर्द सह-सह कर भी जीते जा रहे हैं
ज़हर के हम घूँट पीते जा रहे हैं

ज़िन्दगी तो इक तमाशा बन गई है
और तमाशा देखते हम जा रहे हैं
हम तो दुनिया को समझ बैठे थे अपना
अपने ही अब दर्द देते जा रहे हैं

औरों को राहें बताने की ललक में
अपनी राहें भूलते हम जा रहे हैं
कहने को है ज़िन्दगी अमृत का प्याला
ज़हर को अमृत समझकर पीते जा रहे हैं

कुछ दिखावे करने होते हैं ज़रूरी
यूँ ही ख़्वाबों में बहलते जा रहे हैं
कौन सा कल फिर नया इक ग़म मिलेगा
पूछ कर खुद से सहमते जा रहे हैं

शायद इक दिन दुख बदल जायेंगे सुख में
दुख के हर पल को निगलते जा रहे हैं
दर्द सह-सह कर भी जीते जा रहे हैं
ज़िन्दगी है इक तमाशा देखते हम जा रहे हैं

ooo

मेरा दिवाना मन

मेरा दिवाना मन देखे सपने रोज़ अनोखे
नहीं जानता झूठे सपने देते कितने धोखे
कैसे मैं मन को समझाऊँ इन सपनों की भाषा
पल में झूम रहा आशा में पल में मिली निराशा
कभी-कभी कक्षा में बच्चों से लिखवाया लेख
अगर मैं प्रधानमंत्री बन जाऊँ कैसा बनाऊँगा देश
कभी कहा लिखो अगर मैं अध्यापक होता तो क्या करता
बच्चों के लिखे लेखों को पढ़कर मैंने
नई पीढ़ी से बहुत कुछ सीखा
बच्चों के अच्छे के लिये मैंने ख़ुद को बहुत बदला
चाहा कुछ ऐसे काम करूँ जिससे बच्चों का होये भला
कभी मन कहे तुझे समाज में बहुत कुछ है बदलना
इसके लिये साथियों के संग काम बहुत है करना
रिश्वतखोरी-जमाखोरी को मिटाना
स्वार्थ लालच को दूर भगाना
विश्वासघातियों को दण्ड दिलवाना
देशद्रोहियों को जेल पहुँचाना
जो चुने हुए नेता काम न करें तो
उन्हें भविष्य में कुर्सी तक न पहुँचाना
उन्हें भविष्य में वोट न देना
ईमानदार, देशप्रेमी, वादे निभाने वालों का
सदा साथ देना, उन्हें चोट न देना
बस मन में भावना एक यही है
काम करूँ मैं चोखे
मेरा दिवाना मन देखे
सपने रोज़ अनोखे ०००

हुई गुम मेरी राह

बहारों के सपने बहुत हमने देखे
सहारों के सपने बहुत हमने देखे

किसी चेहरे में मिले कोई अपना
यही चाह बनकर रही एक सपना

न अपनों में कोई मिला एक अपना
न सपनों से आगे बढ़ा कोई सपना

बदलती रहीं हैं बहारें ख़िज़ाँ में
न मुस्काये फूल मेरी फ़िज़ा में

मिले हमसफ़र पर सफ़र छोड़ भागे
हुई गुम मेरी राह चौराहे पे जाके

किसी को समझ आई न दिल की भाषा
लगी हाथ आशा के बदले निराशा

मिले ज़ख़्म अपनों से कुछ इस तरह से
नमक कोई ज़ख़्मों पे बिखराये जैसे

न ज़ख़्मों पे बरसीं कहीं से फुहारें
मिले न सहारे न आईं बहारें

बहारों के सपने बहुत हमने देखे
सहारों के सपने बहुत हमने देखे

हमें इक जुनून था

तुझसे बहुत कुछ तो नहीं चाहा था ज़िन्दगी
थोड़ा सुकून थोड़ा-सा प्यार माँगा था ज़िन्दगी
राहें तो मुश्किल थीं जीने की मगर जीते रहे
ज़हर को अमृत समझ हम ख़ुशफ़हम पीते रहे
ग़लतफ़हमी को कभी पास अपने आने न दिया
जो मिला उसको समझ अपना ही जाने न दिया
बना ले सबको अपना हमें इक जुनून था
ख़ुदा साथ है हमारे हमें यह सुकून था
हम करते रहे सिर्फ़ ख़ुदा की ही बन्दगी
तुझसे बहुत कुछ तो नहीं चाहा था ज़िन्दगी
लेकिन ये तुमने क्या किया
हम समझ न सके
मिलने लगे धोखे हमें
हम कुछ कह भी न सके
अपना जिसे भी समझा
नज़र उसने फेर ली
जिससे सहारा माँगा
उसने ही देर की
लगता है ज़िन्दगी के
ताने-बाने की उलझनों से
निकल न पायेंगे हम ता-ज़िन्दगी
तुमसे बहुत कुछ तो नहीं चाहा था ज़िन्दगी
थोड़ा सुकून थोड़ा-सा प्यार
माँगा था ज़िन्दगी
ooo

शायद वह आये

अधखुली आँखों में
अधूरे सपने छुपाये
बोझिल पलकों में
अश्रुओं पर विराम लगाये
वह बार-बार बस यही सोचती है
शायद वह आये
नींद आँखों से कोसों दूर
मन में चिंता, भय, आशंका
सपने हो जायें न चूर
बीत रहे दिन पंख लगाये
जीती है बस एक आस पर
शायद वह आये
दिन कट जाता
रात आ जाती
यूँ ही ज़िन्दगी कटती जाती
वह थरथराये अधरों से कहती
मेरे जीवन की संध्या में
एक बार
शायद वह आये
○○○

कहें क्या उन्हें

भुलाना जिन्हें चाहा हमने इस दिल से
वही सबसे पहले छिपे आ के दिल में
क्यों याद आयें वो सब हमें जो सताते
कभी दिल में झाँकें या सपनों में आते
कहें क्य उन्हें कभी वो भी थे अपने
कई नाते रिश्ते थे उन सबसे अपने
बहुत बाँटे सुख दुख कभी उनसे हमने
वही आते अब सिर्फ़ हमको रुलाने
कभी लगता अब टूट जायेगा ये दिल
भुलायेगा कैसे उन्हें ये मेरा दिल
मगर मेरे अपने बड़े ही हैं शातिर
कहें दिल में रहते हैं हम तेरी ख़ातिर
रहें हम तेरे ही लिये तेरे दिल में
सताने तुझे बसते हम तेरे दिल में
सताने तुझे बसते हम तेरे दिल में
ये रिश्ते ही ऐसे हैं जो हैं सताते
भुलायें उन्हें जितना वो उतना ही आते
बड़ी बेवफ़ाई करी ख़ुद के दिल ने
जो रहते हैं दूर उनको रखे है दिल में

OOO

एक छोटी-सी शिकायत

हमारे दिल में है कुछ
बहुत कहना चाहते हैं हम
तुम भी तो पूछो हमसे भला
क्या चाहते हैं हम
बरस बीते कि हमसे पूछो तुम हम चाहते क्या हैं
कभी पूछो हमारे दिल से भी हम माँगते क्या हैं
स्नेह से तुम देख लो तो हम कहें हम चाहते क्या हैं
ये इतनी बात भी तुम न समझ पाये कि तुमसे चाहते हैं
ये रिश्ते तो इस जहाँ में ख़ुदा ने ही बनाये
ये फ़र्ज़ है हमारा कि हम उनको निभायें
क्यों होठों को सीकर हम इक दूजे को सतायें
क्यों न अपने सुख-दुख सारे इक दूजे को बतायें
तुमने तो सुना होगा दुख बाँटने से घटता है
और यह भी सुना होगा सुख तो बाँटने से बढ़ता है
कभी थोड़ा-सा समय निकाल कर पूछो
कि हम कहते क्या हैं
कभी तो सोच के देखो
ज़िन्दगी में हम सहते क्या हैं
सुन लो छोटी-सी शिकायत
हमारी चाहतें क्या हैं
कभी तो हमारे लिये भी सोचो
कि हमारी राहतें क्या हैं
कभी तो पूछो हमारे दिल से
हम कहते क्या हैं
○○○

कविता कहाँ गई

जब मेरे हृदय का सागर
लबालब भर जाता है
तो एक ज़ोर का उबाल-सा आता है
और कोरे काग़ज़ पर
बहुत कुद बिखर जाता है
अक्षर कहो, मोती कहो या जज़्बात
या कहो कविता
आज भी ऐसा हुआ
अचानक उमड़ने लगे ढेर से सवाल
पूरी अस्तित्व में घुमड़ने लगे अन्तहीन प्रश्न
अन्तर में सबकुछ
सीमाहीन-सा होता जा रहा था
हृदय की गहराइयों से
कुछ बाहर निकलना चाहता था
शायद आज हृदय की गहराई
हो गई कुछ अधिक गहरी
क्या उसी में डूब गई कविता मेरी
मैं आवाज़ें लगा रही हूँ
बाहर आओ
मैं तुम्हें देखने के लिये बेचैन हूँ
मेरे हृदय से बाहर निकल आओ
मुझे शान्त करो
मर मेरी कविता न जाने कहाँ गई
मैं निस्पन्द, शिथिल, विक्षिप्त-सी घूम रही हूँ
ढूँढ रही हूँ अपनी कविता को
मेरी कविता कहाँ गई?

ooo

गीत बन गया

गीत बन गया था जो ग़म
जिसने सुना वही था नम
कहते हैं कवि बन जाता है एक वियोगी
समझा वही व्यथा जिसने यह भोगी
आ जाते यादों के रेले
वो सब जिन संग हँसे या खेले
झाँकें दिल की गहराई में
फूलों की उस अमराई में
जहाँ नहीं थे कोई काँटे
सुख-दुख सबने संग-संग बाँटे
बिछड़े वो जो कभी थे अपने
बनी ज़िन्दगी झूठे सपने
फिर भी चलती रहती ज़िन्दगी
सारे फ़र्ज़ निभाये ज़िन्दगी
समय भी बदला, बदले हम
नहीं ज़िन्दगी में वो दम
बिछड़ों की यादों में बस
गीत बन गया था जो ग़म
जिसने सुना वही था नम
OOO

हमारे दर्द और हमदर्द

जब कभी इन्सान हो जाता अकेला
दूर तक अपना न कोई चाहे हो सब ओर मेला
तब कहीं से भेज देता सृष्टि का दाता किसी को
प्रतिनिधि अपना बनाकर मदद देने को किसी को
कोई मिल जाता अचानक बन्धु, बेटा, भाई बनकर
राह मिल जाती अकेले को किसी का मित्र बनकर
कितना अच्छा हो अगर सब जान जायें एक सच को
एक वो है जो समय पर है दिखाता राह सबको
उसके भेजे बन्धु मिल जाते समय पर
बाँट लेते अपना दुख हम जिनके काँधे पे सर रखकर
देते रहते जो तसल्ली बनके इक हमदर्द
जिनके साये तले मिटते सारे ग़म और दर्द
आज की दुनिया में जब सबके मनों में स्वार्थ रहता
सच्चा एक हमदर्द ही जो बिना लालच साथ देता

OOO

लेकिन कब तक

ये कैसा वक़्त आ गया है
इन्सान बदल गया है
समाज बदल गया है
अपने सामने पड़े दुर्घटनाग्रस्त आदमी की ओर
किसी इन्सान की नज़र नहीं उठती
आसपास के बीमारों या मुसीबत ग्रस्त
भूखे-प्यासे ग़रीबी भय चोरी डकैती
अपहरण बलात्कार आदि से त्रस्त
ज़रूरतमंद इन्सानों के प्रति
किसी की हमदर्दी नहीं जगती
आस्तीन का साँप बन गया है इन्सान
आदमी के वेश में जानवर बनकर
शिकार की खोज में समाज में घूम रहा है
पहचान कर भी कोई उसका विरोध नहीं करता
सब कायर बनकर, आँखें बंद रखकर
चुपचाप खड़े हैं
कोई उसके मार्ग का अवरोध नहीं करता
किसी को जुर्म करने की आदत पड़ गई है
किसी को जुल्म सहने की आदत पड़ गई है
समाज में घूमती इन ज़िन्दा लाशों में
ज़िन्दा होने के भ्रान्ति है
उनमें न क्रोध है न क्रान्ति - है सिर्फ़ कुण्ठा
फिर भी समाज चल रहा है, शहर बस रहा है
देश भी चल रहा है
लेकिन कब तक? ○○○

धुँधलाती तस्वीरें

बचपन में भी धुँधली शाम रोज़ आती थी
जब मिलने लगते थे दिन और रात
तब उनके मिलन के बीच आता था
एक अजीब धुँधला-सा समय व्यवधान
अँधेरा नहीं पर अँधियारा-सा
अजीब-सा हो जाता था वातावरण
माँ कहती थी इस धुँधले वक़्त में
संध्या वेला में पढ़ाई लिखाई
कढ़ाई बुनाई सिलाई
कुछ नहीं करना आँखें ख़राब हो जायेंगी
आज जब केवल दिन की ही नहीं
मेरे जीवन की भी संध्या आ गई है
ज़िन्दगी शाम सी धुँधला गई है
धीरे-धीरे यह धुँधलका
सब चीज़ों को धुँधला कर रहा है
कुछ पुरानी यादें सहेज कर रखी थीं तस्वीरों में
आज सब बदलती जा रही हैं लकीरों में
तस्वीरों का यह धुँधलापन
और मेरी आँखों का धुँधलापन
मिलकर मेरी जीवन संध्या के सारे रंग छीन रहे हैं
यादों के झरोखों में झाँकने को
कुछ भी बचा नहीं शेष
धुँधली तस्वीरों की तरह ज़िन्दगी होती जा रही निःशेष
जीवन संधा के इस धुँधलके में
जीवन की सारी तस्वीरें धुँधलाती जा रही हैं
बच रहा है केवल शून्य.. शून्य.. शून्य OOO

गूँज कोई न उठी

उनके दिल में चाहते थे आशियाँ हम तो बनाना
आँधियाँ ऐसी चलीं कि नींव तक भी न रही

न दीवारें थीं न छत थी फिर भी उसको समझे घर
ज़िन्दगी भर ज़िन्दगी यूँ ही हमें छलती रही

दिल जले अरमाँ जले इस ज़िन्दगी ने क्या दिया
लम्हा-लम्हा तिनका-तिनका ज़िन्दगी जलती रही

एक तूफ़ानी नदी में छोड़ दी जीवन की नाव
ज़िन्दगी की नाव बिन मल्लाह के चलती रही

क्या मिला क्या न मिला क्या इन सवालों के जवाब
बिन सवाल जवाब के ही हसरतें भरती रहीं

टूटा दिल का आशियाना गूँज कोई न उठी
ये हमारी ज़िन्दगी तो गूँगी बनकर ही रही

दर्द रंजो-ग़म जुदाई सब मिला उनसे हमें
कैसे नाजुक रिश्तों में ये ज़िन्दगी लटकी रही

OOO

हर पाँच साल बाद

हर पाँच साल के बाद नेता जी आते हैं
सुबह से कालोनी के नेता, बड़े नेताओं के छोटे साथी
दिखावटी सफ़ाई करवा कर बेसब्री से करते हैं नेता जी का इन्तज़ार
एक भीड़ के साथ नेता जी आते हैं
हाथ जोड़कर, हार पहनाकर, गर्दन झुकाकर
कालोनी के नेता भी उनके साथ मिल जाते हैं
अब शुरू होता है असली अभियान
जिससे होना है नेता जी का अगले पाँच साल तक कल्याण
हमारे द्वार पर भगवान आये लेकिन
पाँच साल के बाद आये प्रभु को
हम पहचान न पाते अगर उनके हाथ
एक लाचार बेबस भिखारी जैसे जुड़े न होते
तने कंधे आज आगे को मुड़े न होते
उन्होंने दोनों जुड़े हाथ माथे से लगाकर वोट की गुहार लगाई
मन में अपनी सात पीढ़ियों का भला सोचते हुए
प्रकट में जनता के हितकारी वादों की सूची गिनवाई
हमने सोचा न जाने अगली बार ये दो जुड़े हाथ
देखने को मिलें न मिलें या कोई नये प्रभु आयें
इसलिये मन में दबाकर टूटे वादों का संताप
हमने भी जोड़ दिये अपने हाथ चुपचाप
यूँ ही हर पाँच साल के बाद वोट के भिखारी आयेंगे
हम सब घंटों लाइनों में खड़े होकर वोट देने जायेंगे
जीतने के बाद नेताजी पाँच साल के लिये विदा लेने आयेंगे
हम सब भिखारी से राजा बने व्यक्ति के सामने
हाथ जोड़कर नमन करेंगे ०००

धरती के सरसाते पेड़

कभी नहीं घबराते पेड़
कभी नहीं डर जाते पेड़
आँधी, तूफ़ान, गर्म हवायें, बर्फ़ और ओलों की मार
कभी कुल्हाड़ी, कभी है आरी और कभी चाकू की मार
इन सबसे कट जाते पेड़
इन सबको सह जाते पेड़
फल लगते ही झुक जाते हैं, नहीं गर्व अभिमान करें
जैसे विद्या गुण आने पर, गुणी और विद्वान करें
खड़े-खड़े मुस्काते पेड़
फूलों से खिल जाते पेड़
अपने स्थान से ज़रा न हिलते, फिर भी हैं वो सबसे मिलते
दूर-दूर के पेड़ों के कत्था, रबड़, गोंद
लकड़ी, औषधियाँ, फल दुनिया भर में मिलते
कहीं न आते जाते पेड़ दुनिया भर में जाते पेड़
कहीं सैंकड़ों, कहीं हज़ारों वर्षों से ये अड़े हुये हैं
सैनिक से डट जाते पेड़, प्राणियों में बँट जाते पेड़
पेड़ों को जो काट-काट कर
बना रहे बंजर धरती को
पानी, वर्षा, मिट्टी सबसे, काट रहे हैं वो धरती को
वर्षा के होते सहायक पेड़
धरती को सरसाते पेड़
कभी नहीं घबराते पेड़

OOO

कचरा

उस दिन आये एक मित्र घर हमारे
बड़े परेशान से दिख रहे थे बेचारे
साथ में पत्नी और युवा पुत्र भी थे
पर सबके चेहरे उतरे-उतरे से थे
पंखा चलाया ठंडा पानी पिलाया शान्त किया उन्हें
फिर प्यार से पूछा कि क्या तकलीफ़ हैं उन्हें
भाई साहब क्या बतायें आपको
आप तो जानते हैं हमारे परिवार को
मेरे माता-पिता भाई-बहन सब रहते हैं घर में
यह संयुक्त परिवार मेरे जीवन का आधार है
मेरा बेटा सबकी आँख का तारा है
सबको प्राणों से अधिक प्यारा है
बड़ी उत्साह से शादी के लिये देखने गये लड़की
सब ठीक था पर उसकी एक बात बड़े ज़ोर से खटकी
लड़की लड़के को लेकर गई अपने घर के अन्दर
एक बता बताइये मिस्टर पूरब सिकन्दर
आपके साथ जो लोग आये हैं
उनके अलावा और कितना कचरा है घर में
सुनकर मेरा बेटा रह गया हक्का-बक्का
मेरे अपनों को कह रही है कचरा
उसने भी मारा एक छक्का
जो हैं उनके अलावा भी घर में आने वाला था
एक नया कचरा, किन्तु अब उसके लिये जगह नहीं है
पर भाई साहब मैं बहुत परेशान हूँ
क्या आज की पीढ़ी के लिए बुजुर्ग सिर्फ़ कचरा हैं
ये कैसा व्यवहार है, यह कैसा नज़रिया है?

सूर्यदेव का आगमन

पूर्व से हो अवतरित क्षितिज के ऊपर
देख रहे हैं दीपंकर स्नेह से भू पर
चारों ओर स्वर्ण की चाद बिछाकर
लुढ़का रहे हैं सूर्यदेव कंचन धरा पर
बिखरा दी अरुणिमा फैल गई लालिमा
अँधियारी रात गई दूर हुई कालिमा
अप्रतिम तेज से दिनकर धधक रहे
सातों घोड़ों के चरण जोश से फड़क रहे
दिनकर की दीप्ति से दीपित सब सृष्टि है
जिस ओर दृष्टि जाये कंचन की वृष्टि है
नित्य स्वर्ण खान लिये आते हैं प्रभाकर
बिखरा कर निखरा कर प्रदीप्त करते भास्कर
प्रकाश अंशुमान का धरती गगन को जोड़ रहा
जैसे स्वर्ण हस्ति कोई सब ओर दौड़ रहा
जाग उठे सुप्तजन आते हैं दिवाकर
विदा हों चन्द्रदेव हाथ जोड़ें हम सुधाकर
हो गये सूर्यदेव प्रकट इस धरा पर
नमन करें ज्योतिपुंज धरा पर कृपा कर
आगमन हुआ देव स्वागत है आपका
आपसे कल्याण है धरती आकाश का
○○○

ख़ामोशियों की चादर

काश तुमने
मेरी ख़ामोशियों की चादर के पीछे छिपे
मेरे अरमानों को देखा होता
मेरे अस्तित्व मेरे स्वत्व का होना भी
स्वीकार किया होता
मेरी मरती हुई तमन्नाओं पर
एक नज़र डाली होती
मेरे दिल को एक बार परखा होता
मेरी आँखों में कुछ सपने थे
जीवन में कुछ अच्छा करने के सपने
सोचा था तुम मेरे सपनों को पूरा करोगे
मेरी ख़ामोशियों को दूर करोगे
मेरे सपने क्यों रूठ गये, क्यों टूट गये
प्रश्नों के उत्तर तुम्हारे ही पास हैं
काश तुमने एक बार सिर्फ़ एक बार
मेरी आँखों को पढ़ा होता
दिल के हर कोने एक ही तस्वीर थी
सपनों की उसी तस्वीर में छुपी मेरी तक़दीर थी
लेकिन तक़दीर को कुछ और ही मंज़ूर था
तस्वीर का तो शीशा ही चकनाचूर था
काश तुमने अहं त्याग कर
अन्तर की गहराइयों में छुपी
उन तस्वीरों की तरफ़ झाँका होता
मेरे अरमानों मेरे सपनों की क़ीमत को आँका होता
मेरे दिल को एक बार परखा होता
तो आज मेरा अस्तित्व
ख़ामोशियों की चादर ओढ़कर
चादर के पीछे न छिपा होता ○○○

जीवन की राहें

जीवन की राहें बड़ी कठिन
रुकना मुश्किल चलना मुश्किल
कुछ ऐसी बातें हो जातीं
सहना मुश्किल कहना मुश्किल
जी-जी कर मरते जाते हैं
मर-मर कर जीते जाते हैं
जीने मरने का अजब खेल
जीना मुश्किल मरना मुश्किल
कितने अरमान और सपने
इन्सान संजोकर रखता है
जब सुबह हुई टूटे सपने
फिर उनका जुड़ पाना मुश्किल
टूटे सपनों की डोर लिये
जीवन तो नहीं कट पाये बन्धु
जो टूट गया है उसे छोड़
आगे बढ़ना भी नहीं मुश्किल
कुछ वक़्त लगेगा सँभलने में
दुख के सागर से निकलने में
कर हिम्मत खुदा मदद देगा
कर उसपे भरोसा गई मुश्किल
जो राहें पीछे छूट गईं
जो भी उम्मीदें टूट गईं
अब छोड़ उन्हें आगे बढ़ जा
नई राह पकड़ ले
नहीं मुश्किल
OOO

घनन-घनन गरजो रे मेघा

घनन-घनन गरजो रे मेघा
झनन-झनन बरसो रे मेघा
दादुर मोर पपीहा बोलें
कानों में अमृत रस घोलें
कुहू-कुहू सुन बरसो मेघा
पीहु-पीहु सुन बरसो मेघा

प्यासी धरती बुला रही है
दरक-दरक दिल दिखा रही है
उसकी प्यास बुझा दो मेघा
दिल के घाव सुखा दो मेघा
उसके ज़ख़्म भरो तुम मेघा
धरती को सरसा दो मेघा

बरस-बरस कर जलथल कर दो
हरा-भरा मरुथल को कर दो
सरस-सरस सब करो ये मेघा
गरज-गरज बरसो रे मेघा
सभी तक रहे राह तुम्हारी
करो कृपा हे गगन विहारी
गर्जन-तर्जन करो रे मेघा
झनन-झनन बरसो रे मेघा

आओ ढोल नगाड़ों के संग
भर दो धरती में सारे रंग
चम-चम-चम बिजली चमका कर
नदी ताल सब भर दो मेघा
घनन-घनन गरजो रे मेघा
छम-छम-छम बरसो रे मेघा

अम्बर के राही

भूल गये राहें अम्बर के राही
जब मन आये पकड़ चल पड़ें
राहें अपनी मनचाही
राह देख रही थी उनकी
धरती प्यासी-प्यासी
आहें भरकर दुखी हो रहे
धरती के वासी
सूनी आँखों से ताक रहे थे
सब अम्बर की ओर
मन में बस इक आस यही थी
आयेंगे चितचोर
जो अमृत बरसायेंगे
धरती को सरसायेंगे
लेकिन यह क्या हुआ अचानक
आकर भी वो चले गये
सूनी आँखें सूनी रह गईं
धरती वासी छले गये
चले गये पानी लेकर वो
राह पकड़ मनचाही
खड़े रह गये ठगे हुये से
सब धरती के वासी
लेकर दरकी सूखी छाती
रह गई धरती प्यासी
भूल गये राहें अम्बर के राही
OOO

ख़ामोश गूँज

कभी इससे कभी उससे कभी खुद से बात की
इस तरह हमने रोज़-रोज़ दिन से रात की

फिर हुए ख़ामोश अपनी बेबसी पे हम
पर ख़ामोशियों ने भी हमसे मुलाक़ात की

अपनी ही ख़ामोशी ने, हमला हम पर किया
बतलाओ सबकुछ हमको तुम्हें किसने मात दी

हम सोचते ही रह गये बतलायें क्या इन्हें
शायद हमारी बेबसी ने ही हमको मात दी

कमज़ोरियों का अपनी इल्ज़ाम दें किसे
अपनी तबाहियाँ तो अपने ही साथ थीं

करना बहुत था चाहा पर कुछ न कर सके
शायद ये बदनसीबियाँ ही मेरी आघात थीं

किससे करें शिकायत करें किससे हम गिला
जो कुछ भी हुआ वो मेरी अपनी बात थी

मेरी ख़ामोशियों ने फिर भी छोड़ा नहीं मुझे
चारों तरफ़ से गूँजकर करतीं उत्पात थीं

तुम ही बताओ किससे कहें अपने दिल का हाल
हँसकर वो आगे बढ़ गये जिनसे भी बात की

सलवटें और जमघटें

आज अचानक मन में पड़ी सलवटें
एक-एक करके खुलने लगीं
ऐसा लगा जैसे वर्षों से जमी सलवटें
कुछ सोचकर स्वयं ही पिघलने लगीं
अपनों के बीच आई
दूरियों की दीवारें गिरने लगी
ग़लतफ़हमियाँ भागने लगीं
हृदय गदगद हो उठा
ऐसा लगा वक़्त ले रहा है करवटें
दूर हो रही हैं तन्हाइयाँ
सलवटों के बीच दबी
समता-ममता की भावनायें जागने लगीं
स्नेह का ज्वार उठा
अन्तर अपनों को पुकार उठा
एक बार फिर बज उठीं शहनाइयाँ
हाँ, शायद एक बार फिर बीते दिन
आ जायेंगे वापिस दूर हो जायेंगी रुस्वाइयाँ
एक बार फिर चहकेंगी महफ़िलें
लगेंगे चहकते-महकते जमघटें
काश, कभी पड़तीं ही न ये सलवटें
ooo

रूठे गीत-संगीत

एक तान छेड़कर टूट गये तार सारे
दिल की सितार के
एक राग छेड़कर तोड़ गये साथ
राग प्रेम के प्यार के
आँखों के आँसू ठहर गये पलकों पर
गिर गये तो झरने बन जायेंगे धार के
होठों की हँसी भी चुरा ली किसी ने
अब नहीं गाते वो गाने बहार के
सजना सँवरना भूल गये सब कुछ
अब नहीं कोई बहाने सिंगार के
मुस्कुराहटों ने तोड़ लिये नाते
कहाँ से उनको लायें पुकार के
टूटे अरमान रूठे गीत-संगीत
कहाँ से आयें ख़ुशी के तराने उधार के
लाखों दुआयें करीं सजदे हज़ार किये
आये नहीं जवाब कोई मेरी गुहार के
OOO

मेले चलाने वाले

ये ज़िन्दगी के मेले बरसों चला करेंगे
मेले में एक दिन बस हम ही नहीं रहेंगे

दुनिया की महफ़िलों में रौनक़ जमी रहेगी
फिर भी किसी की आँखों में कुछ नमी रहेगी
यह रंगमंच अभिनय से महकता रहेगा
लेकिन हमारे जलवे इसमें नहीं रहेंगे

कुछ काम कर लिये हैं कुछ काम अब भी बाक़ी
क्या हाथ में किसी के, मर्ज़ी है बस ख़ुदा की
जो कहना था कहा है जो सहना था सहा है
अब आगे जो भी कहना अल्लाह से कहेंगे

दुनिया है इक समन्दर हम बूँद एक इसमें
हस्ती हमारी क्या है मिल जायेंगे इसी में
दुनिया के फूल काँटे झोली में भर के अपनी
सागर की हर लहर के संग-संग में हम बहेंगे

उस पर हमारा हक़ है जो भी दिया जहाँ ने
ये देखना हमें है अपनी जगह कहाँ है
मेले में लोग आते मेले से लोग जाते
मेले चलाने वाले सदियों तलक रहेंगे

 OOO

बीती बात

आँख की झपक में
हार गये जज़्बात
वक़्त ने करवट ली
जीत गये हालात
बदल गई ज़िन्दगी एक ही पल में
भूल गये सारे रिश्ते अहसासात
कहते सब होता है क़िस्मत के कहने से
कैसे सबकुछ हो जाता बात बेबात
कुछ कहना या पूछना दूर की बात है
हो जाते सोच पर भी पहरदार तैनात
पड़ जाते हैं होठों पर बड़े पक्के ताले
बात नहीं होती चाहे हो जाये मुलाक़ात
दुनिया की नज़रें हैं बहुत तीखी
ज़रा-ज़रा-सी बात की होती तहक़ीक़ात
अच्छा यही है भूल जायें सब कुछ
जो हुआ वो सब था एक बीती बात

OOO

जब खिला गुलाब

जब खिला गुलाब
सुगन्ध भर गई हवाओं में
जब खिला गुलाब
रंग भर गये फ़िज़ाओं में
जब खिला गुलाब
तितलियों के दिल मचल गये
जब खिला गुलाब
भ्रमर गुनगुनाये उछल गये
जब खिला गुलाब
क़िस्मत जाग उठी काँटों की
संग-संग गुलाब के
लो पूजा हुई काँटों की
जब खिला गुलाब
भाग्य बदले हवाओं के
गंध-रंग-प्रीत-गीत
घुल गये हवाओं में
OOO

बातों-बातों में

बातों-बातों में बदल जाती हैं दिल की बातें
बातों-बातों में ही लग जाती हैं कितनी घातें

सोचता रहता है इन्सान न जाने मन में क्या-क्या
सोचता रहता है भगवान न जाने उसके लिये क्या

कभी बातों ही बातों में रूठ जाते अपने
कभी बातों के बढ़ जाने से टूट जाते सपने

कभी बातें बढ़ने से ज़िन्दगी बदल जाती है
बातें ठीक करने में ज़िन्दगी निकल जाती है

अच्छा हो बातों को यूँ बढ़ने न दें हम
रिश्तों की एक ग़लत मूरत गढ़ने न दें हम

छोटी-छोटी बातें बढ़कर रिश्ते तोड़ देती हैं
इन्सान की ज़िन्दगी का रुख़ ही मोड़ देती हैं

एक ही बात तुमसे कहनी है हमको भगवान
रूठें न अपने कभी ऐसा हमें दो वरदान

समय रहते ही बात सँभालने की बुद्धि दे दो
एक दूसरे को समझने की सभी को सिद्धि दे दो

ऐसा हो जाये तो संसार बदल जायेगा
मानव से मानव का हर रिश्ता सँवर जायेगा

कुछ आते हैं कुछ जाते हैं

जो हमें भुलाकर चले गये वो याद हमें क्यों आते हैं
जो जला गये दिल की परतें वो दिल को क्यों तरसाते हैं
ये दिल भी अजब करिश्मा है जो बैरी को अपना समझे
दिल की बातें तो दिल जी जाने पर आँखों ने क्या जुर्म किया
जो झर-झर-झर दिन रात झरें ये कैसा उसने दर्द दिया
आँखें तो सदा ख़ामोश रहीं फिर क्यों उनको ये सज़ा मिली
जो ख़ता करी दिल ने उसकी आँखों को क्यों ये दग़ा मिली
जो चले जो भूल गये वो साथी क्यों तड़पाते हैं
बीते अतीत के साये क्यों आकर दिन रात सताते हैं
जो हमें भुलाकर चले गये वो याद हमें क्यों आते हैं

दुनिया तो इक रंगमंच जहाँ कुछ आते हैं कुछ जाते हैं
अपना-अपना नाटक करके फिर परदे में छुप जाते हैं
कुछ दिन में दुनिया उन्हें भूल अपने सुख-दुख में लग जाती
कुछ होते हैं जिनके अभिनय से कुछ नई उमंगें जग जातीं
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो न भूलें न याद आयें
ऐसी ही नुकीली यादें आकर दिल को छलनी कर जायें
भूले-बिसरे पल-पल छिन-छिन क्यों लौट-लौट कर आते हैं
धोखे से दिल में आ-आ कर नई चोट लगाकर जाते हैं
जो हमें भुलाकर चले गये वो याद हमें क्यों आते हैं
जो जला गये दिल की परतें वो दिल को क्यों तरसाते हैं

OOO

अपनी ही नज़रों में गिरकर जीना

बड़ा कठिन है अपनी ही नज़रों में गिरकर जीना
बड़ा कठिन है नित जीते जी मर-मर कर फिर जीना
फिर क्यों ऐसे काम करें हम जिनसे मिलें दुख-दर्द
फिर क्यों अपने लिये समेटें धूल भरी ये गर्द
जीवन की राहों में पग-पग काँटे और बाधायें
अच्छा होगा अगर हम अपना दामन उनसे बचायें

भला न भी कर पायें अगर तो बुरा करें न किसी का
जो भी मदद हमारे चाहे हम रखें ध्यान उसी का
सबके दिल को अपने जैसा समझ अगर हम देखें
तो समाज में कम हो जायेंगे अविश्वास और धोखे
दूजे को नीचा दिखला कर ऊँचा कोई न उठता
जो ख़ुद ऊँचे काम करे वह ही ऊँचा उठ सकता

एक अँगुली किसी को दिखलायें चार उठें तब अपनी ओर
क्यों न किसी अच्छे मक़सद से शुरू करें हम अपनी भोर
जो भी काम करें हम ऐसा, जिसे हमारा दिल चाहे
दिल तो कभी झूठ न बोले सच्ची बात वो बतलाये
ग़लत काम काम कोई न जाने पर जाने आत्मा हमारी
जब जागे आत्मा हमारी तभी है सफल हमारा जीना
वरना बड़ा कठिन है अपनी ही नज़रों में गिरकर जीना

OOO

अपने रिश्ते और नाते

जीवन की लम्बी राहों में
कुछ मुक़ाम ऐसे भी आते
जब हमें तराज़ू में रखने पड़ते हैं
अपने रिश्ते नाते
भाषा रिश्तों की अजीब है
कोई समझ सके न इनको
कौन दूर है कौन क़रीब है
किससे अपना कैसा नाता
कौन समय पर धोखा देता
कौन समय पर काम है आता
रिश्ते कभी सपनों में आते
लगता सारा प्रेम सृष्टि का
हम अपने अपनों में पाते
कभी अचानक जुड़ जाते हैं
कुछ अनजानों से सच्चे नाते
तब हम जीवन के इक नये मोड़ पर मुड़ जाते हैं
जीवन एक सफ़र लम्बा है
जिसमें नये-नये अनुभव आते
कभी छूट जाते हैं अपने
कभी बनें नये प्यारे नाते
OOO

मातृभूमि माँ भारत माता

मातृभूमि माँ भारत माता तू ही है मेरा संसार
तेरी माटी में ही मिलता मुझे सारी सृष्टि का प्यार
तेरी गोदी में जन्म लिया तेरी धरती पर पले बढ़े
यहीं तो घुटनों चलना सीखा यहीं हुए पैरों पे खड़े
तेरी ही धरती पर आये राम, कृष्ण और गौतम बुद्ध
महावीर, तुलसी, कबीर और सूरदास नानम प्रबुद्ध
कालिदास, पंत, निराला, बच्चन, प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद
जिनकी बुद्धिमत्ता पर किसी के मन में रहा न कोई विवाद
तेरी गोदी में जन्मे माँ लाल-बाल-पाल और गाँधी
भगत सिंह, आज़ाद, सुभाष न जिन्हें झुका सकी गोरों की काली आँधी

तेरी गोदी में जन्मे माता कितने ही अमूल्य अवतार
तेरे वीरों बुद्धिमानों ने किया अमर भारत का नाम प्रचारा
उत्तर में है मुकुट हिमालय तीन ओर सागर लहराये
तेरे पर्वत नदी घाटियाँ दुनिया के मन को भरमायें
तेरे पर्वत और गुफाओं में और नदियों के पावन तट पर
तेरी ही उपवन, जंगल में रहते थे कितने ही ऋषिवर
रचकर वेद पुराण जिन्होंने सारी सृष्टि को दिया ज्ञान
जीवन का न छूटा कोई तत्व इतना है मिला ज्ञान-विज्ञान
नृत्य, गीत-संगीत, काव्य-साहित्य, चिकित्सा उनसे न छूटा कोई तत्व
अर्थशास्त्री चाणक्य सरीखे जिनका आज भी वही महत्त्व
तव चरणों में स्वर्ग हमारा तू ही जीवन का आधार
मातृभूमि माँ भारत माता तू ही है मेरा संसार

OOO

ज़रा ऐतबार चाहा था

कहा न गया हमसे जो कहना चाहा तुमसे
न सुन ही सके हम बन्धु सुनना चाहा जो तुमसे

न चाँद तारे न दो जहाँ ही माँगे थे तुमसे
न तुमने सुना चाहते थे क्या हम तुमसे

ज़रा-सा प्यार ज़रा-सा ऐतबार चाहा था तुमसे
ये इतनी चीज़ ही मिल न पाई हमको तुमसे

यूँ कहने को तो बहुत कुछ था हम कह न पाये
बस दिल में सभी छुपाते रहे जो मिला था तुमसे

भला या बुरा जो भी मिला, बन्धु वो मेरा था
नहीं है कोई शिकवा-शिकायत भी अब तुमसे

याद तुम्हें न आयेंगे बस एक अजनबी ही तो हैं हम
पर हम न कभी भुला पायेंगे वो सब जो मिला है तुमसे

OOO

हज़ार अफ़साने

हमारे दिल में लिखे हैं हज़ार अफ़साने
तुम्हें क्यों बतायें दिल को तो दिल ही पहचाने

हमारे दिल हैं है क्या हमको तो पता ही नहीं
गये न जाने कितने बरस हमसे वो मिला ही नहीं

मिला न वक़्त हमें दिल से बात करने का
कुछ अपनी सुनाने का कुछ उसकी बात सुनने का

ये दिल भी तो बड़ी अजीब चीज़ है ऐ दोस्त
रहता हमारे अन्दर पर दुनिया से डरे ऐ दोस्त

सहेजे रखता है न जाने कितनी कहानियाँ अन्दर
कोई न समझ पाये कितना है गहरा ये समन्दर

नादानियाँ करे खुद रोये फिर दिल ही दिल में
फिर यह भी कहे ख़ुद से रखना है सबकुछ बिल में

यह बिल जो दिल के अन्दर खुल जाये न किसी दिन
दिल के राज़ को दिल ही बचाये दिल ही जाने

जो राज़ है हमारे कभी उनको न कोई जाने
हमारे दिल में लिखे हैं हज़ार अफ़साने

तुम्हें बतायें क्या दिल को तो दिल ही पहचाने

सवारी हवा की

सवारी हवा की हवा ही सवार
चला क़ाफ़िला यूँ हवाओं का आज
जिधर मन चला यह उधर चल पड़ा
कहीं रह गया जो दो पल को खड़ा
तो मत पूछिये क़हर कैसा किया
लगा जैसे हाथी हो मदिरा पिया
उड़ाया किसी को किसी को पछाड़ा
गिराया किसी को किसी को उखाड़ा
बड़े से बड़े पेड़ जड़ से निकल कर
पड़े दूर अपनी ज़मीं से बिछड़ कर
ये बन जाती है जब कभी चक्रवात
तो फिर आदमी की भला क्या बिसात
फँसा चक्रवातों में उसका हुआ क्या
हवाओं से पूछो कि उनका किया क्या
कहाँ पर फँसे थे कहाँ जा पड़े
कहाँ चल रहे थे कहाँ हैं खड़े
ये किस देश से आते परदेसी झोंके
सफ़र ही सफ़र न कोई इनको रोके
हवाओं पे कोई लिखेगा क्या नाम
इन्हें दे दो अगली जगह का सलाम
सवारी हवा की हवा ही सवार
न है कोई डोली न कोई कहार
ये जायेंगे आगे दिखायेंगे नाच
चला क़ाफ़िला यूँ हवाओं का आज
सवारी हवा की हवा ही सवार

OOO

बीते दिनों की बीती बातें

जब तब आकर हमें सतातीं बीते दिनों की बीती बातें
जब सोने के दिन होते थे चाँदी जैसी चाँदनी रातें
गर्मी की वो गरम दुपहरी सूरज बाबा बनकर प्रहरी
सबको ढकते थे चादर से धूप की गरम-गरम चादर से
उस चादर में लिपट हवायें लू बनकर हमको दहलायें
पर हम लू से न डरते थे खेलकूद मस्ती करते थे
सारी सखी सहेली मिलकर भाग दौड़ करते थे दिन भर
शाम को घर में करते काम माँ को कुछ देते आराम
फिर सब इक दूजे को बुलाकर, सखी सहेली मिलतीं आकर
बैठ कहीं भी महफ़िल जमती बचपन में क्या बातें कम थीं?

गपशप करते गाने गाते अन्ताक्षरी का रंग जमाते
फिर अम्मा आवाज़ लगातीं बिटिया अब अन्दर आ जाओ
शाम हो गई आरती गाओ अपने ईश की कृपा तुम पाओ
पापा जब आफिस से आते सब बच्चे थे खुश हो जाते
फिर अम्मा खाने काक बुलातीं गरमा गरम रोटियाँ खिलातीं
राम में बिस्तर लगते छत पर बैठ के सब करते थे गपशप
बाराती तारों के संग में चंदामामा आ जाते थे
उनकी प्यारी छाँव के नीचे मीठी नींद हम सो जाते थे
कहाँ गये मीठे भोले दिन ए.सी. में वैसी नींद न आती
बीते दिनों की बीती बातें जब तब आकर हमें सतातीं
याद दिलाकर वो न्यारे दिन कभी हँसातीं कभी रुलातीं
तुलना उनकी करों आज से तो दिल को हैं बहुत जलातीं
काश! एकबार फिर आ जायें वो दिन जिनकी याद रोज़ है आती

OOO

कभी-कभी जब हम

कभी-कभी जब हम अपने साथ होते हैं
चुपके से अकेले में कभी हँसते कभी रोते हैं
बहुत-सी बातें जो किसी से कह नहीं पाते
बहुत से प्रश्न जो किसी से पूछ नहीं पाते
वो सब बातें हम ख़ुद को बताते हैं
ख़ुद से ही प्रश्न पूछकर ख़ुद ही उत्तर सुनाते हैं

कभी-कभी जब हम अपने साथ होते हैं
बहुत दूर-दूर तक घूमने जाते हैं
वो स्थान जिनके सपने हमें आते हैं
सपनों में जो हमें अपने पास बुलाते हैं
वो शहर, गाँव, नदियाँ, सागर
जो हमारी कल्पनाओं को सजाते हैं
वो अपने बरसों से जिनसे मिल नहीं पाये
दूर-दूर से हमारी यादों में आते हैं

कभी-कभी जब हम अपने साथ होते हैं
थोड़ी देर के लिये सब कुछ भूल जाते हैं
दुनिया के गिले शिकवे या ताने तिश्ने
किसने दिये दर्द दिल को किसने दिये ज़ख़्म कितने
भूल जा अतीत को दिल ख़ुद को समझाता है
क्यों बीती बातों में ख़ुद को उलझाता है
फिर हम कुछ अच्छे क्षणों को याद करते हैं
कुछ नये मीठे प्यारे सपने संजोते हैं
कभी-कभी जब हम अपने साथ होते हैं
बहलाते-सहलाते हैं ख़ुद को कभी हँसते हैं कभी रोते हैं

चमकीली यादें

अन्तःकरण की दूर गहराइयों में
छिपी रहती हैं लम्बे अरसे की
चमकीली यादें
मन की अमराइयों में
फलती फूलती रहती हैं
बिसरी-बिसरी भूली यादें
कभी ये यादें जब कुलबुलाती हैं
अवचेतन से बाहर आने को
सुगबुगाती हैं होठों तक आती हैं
फिर किसी सोई दुपहरी-सी ठिठक जाती हैं
डरकर लौट जाती हैं उन्हीं अँधेरे कोनों में
वहीं से कभी-कभी
टिम-टिम टिमटिमाती हैं
माने छुप जाती हैं अन्दर
डरकर बाहर के अँधेरों से
या निकलना नहीं चाहतीं
अन्तर में जड़े फोटो फ्रेम के घेरों से
बरसों से सहेज कर रखे यादों के ख़ज़ाने
निकल कर बिखर न जायें जाने-अनजाने
उदास ठंडक में ढकी कुछ चमकीली यादें
कभी तो झिलमिलाती हैं पर कहीं
खो न जायें बाहर की क्रूर दुनिया में
छुपी रहें चुप-चुप सी मन की गहराइयों में
OOO

सूरज और बादलों की जंग

देख रहे थे आसमान में आते जाते रंग
सूरज और बादलों में कुछ छिड़ी हुई थी जंग
चीर बादलों का घेरा सूरज जी कभी निकलते
और कभी ढेरों बादल आकर सूरज जी को ढकते
हँस-हँस कर हम देख रहे थे अब जीतेगा कौन
क्या निकलेंगे सूरज बाबा या फिर होंगे मौन
तभी अचानक ढेरों बादल आसमान में घिर आये
सूरज बाबा उनके पीछे ढक गये मुँह को छुपाये

हुआ बादलों का अधिकार तो बजने लगे ढोल और ताशे
ज़रा देर में आसमान से गिरने लगे बताशे
देख के मोटी-मोटी बूँदें नाच उठे सब लोग
बरसो मेघा-बरसो मेघा गाने लगे सब लोग
तभी लगा जब आसमान में लगे फूटने गोले
आसमान से गिरने लगे फिर मोटे-मोटे ओले
चमक-चमक कर बिजली ने भी ख़ूब जमाया रंग
सूरज बादल बिजली सबके अपने-अपने ढंग
देख रहे थे आसमान में आते जाते रंग
सूरज और बादलों में कुछ छिड़ी हुई थी जंग

OOO

वो छोटी-सी लड़की

बाद बहुत से इन्तज़ार के आज अनोखा दिन है आया
चमकीले सूरज बाबा ने क्षण भर को मुखवृन्द छुपाया
हाथ जोड़कर मैं चिल्लाई छुपो देवता ज़रा देर तो
वरुण देव को आने दो तुम अम्बर में अब ज़रा देर को
तभी चल पड़ी हवा ज़ोर से और चली ज़ोरों से आँधी
माने वरुण देव ने अपने आने की भूमिका थी बाँधी
होने लगा ढमाढम नभ में बजे ज़ोर से ढोल नगाड़े
बिजली चमकी राह दिखाई और वरुण देवता पधारे
रिमझिम-रिमझिम वर्षा आई मौसम भी हो गया सुहाना
सामने घर की गुड़िया ने वर्षा में शुरू कर दिया नहाना
रंग-बिरंगे कपड़े पहने पीठ पे झूल रहीं दो चुटियाँ
लड़की नन्ही-सी थी पर, लम्बी-लम्बी थीं उसकी चुटियाँ
फिर उसने चोटियाँ खोल कर पीठ पे बालों को लहराया
हाथों को कंधों के दोनों तरफ़ लम्बा फहराया
पाँच मिनट तक नयन बंद कर आसमान को देख रही थी
मानो वरुण देव को अपना धन्यवाद वह भेज रही थी
फिर नन्हे पग लगे थिरकने वर्षा का आनन्द उठाया
मैंने अपने आँगन से इस सुरम्य दृश्य का आनन्द उठाया
तभी अचानक याद आ गई मुझे एक छोटी-सी लड़की
ऐसे ही तो नाचती गाती रहती थी वो छोटी लड़की
इस लड़की को देख अचानक निकल आई वो छोटी लड़की
दिल के कोनों में जो अब तक छुपी हुई वो छोटी लड़की
आज उम्र के इस पड़ाव पर निकल पड़ी क्यों छोटी लड़की
शायद सबके दिल के अन्दर रहती वो छोटी-सी लड़की

OOO

अख़बार भी अख़बार नहीं रह गया

बरसों से आदत है सुबह-सुबह अख़बार पढ़ने की
देश में होने वाली जनसेवी योजनाओं से
एक अच्छा नया समाज गढ़ने की
लेकिन वक़्त ऐसी तेज़ी से बदला
कि अख़बार तो अख़बार ही नहीं रह गया
बन गया चटपटी या निराशाजनक ख़बरों का भंडार
या फिर देश का सारा धन कहाँ बह गया
प्रथम पृष्ठ से ही शुरू हो जाती हैं
भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अनाचार
दुर्व्यवहार और बलात्कार की ख़बरें
किसने कितना बड़ा घोटाला किया
किसने रैकेट, हवाला किया
किसने किसको दीवालिया किया
सदियों पुराने नियमों के अनुसार
छोटे अपराधी को छोटे जुर्म पर बड़ी सज़ा मिली
बड़े अपराधी को बड़े जुर्म पर छोटी सज़ा मिली
अख़बारों में ऐसी ख़बरें पढ़कर लगा
शायद बड़े लोगों की नींव कुछ तो हिली
चाहे थोड़ी ही सही कुछ सज़ा तो मिली

लेकिन जेल में पहले दिन की ख़बर से
उनके दिल पर आक्रमण अर्थात् 'हार्ट अटैक' हो गया
नेताजी को अस्पताल के वी.आई.पी. बिस्तर पर लिटा दिया
तमाम डाक्टर, नर्सों को उनके आसपास बिठा दिया
दिल के दर्द ने उन्हें दिया वरदान
झूठा ही सही दुनिया बनी मूर्ख
और वी.आई.पी. महोदय बन गये महान

ऐसे महान लोगों को जेल से निकलने पर
पहनाये जाते हैं फूलों के हार साथ ही मिलती है जय-जयकार
जेल के कमरे में हैं एसी, टीवी, फ्रीज़ और ताज़े अख़बार
जेल में उन्हें कितनी सुविधायें मिली इससे उनकी ऊँचाई नपती है
वास्तव में यह छोटी सी सज़ा तो उन्हें
पूर्ण विश्राम के लिये मिली थी
जेल उनको अपराध के लिये नहीं
आराम के लिये मिली थी

आगे के पृष्ठों में दवाओं, खाने की चीज़ों, मसालों में मिलावट
नैतिकता के हर मूल्य में गिरावट
ड्रग्स, सोना-चाँदी-हीरों और मनुष्यों की तस्करी
मानव के जीवन मूल्यों से मसख़री
स्नेह, प्रेम, मानवतर, नैतिकता भूलकर
मानव ने अपना ली दानवता
आजकल समाचार पत्रों में छपते हैं ऐसे ही समाचार
नये युग में हो रहा है नये साहित्य का अवतार
कविता, कहानी, लेख, उपन्यास
सभी में सुलग रही डर-भय-आतंक
और कुण्ठाओं की आग
गीता, रामायण, वेद-पुराण
राष्ट्रप्रेम से भरे वीरों के आख्यान
आज का समाज सब भूल गया
शायद इसी कारण
अख़बार भी अख़बार नहीं रह गया

OOO

प्रशिक्षण नेताओं का

अपने नेताओं से भारत की जनता के कुछ प्रश्न हैं
अगर आप उत्तर दें और कुछ करें तो हम भी प्रसन्न रहें
आज का युग विशेषताओं का युग है
बी.ए., एम.ए. करने के बाद भी
अगर आप विशेषज्ञ नहीं बने
तो समझिये आप कुछ नहीं बने
ट्रेनिंग कोर्स एक विशेष प्रमाण पत्र आधार पर
अर्थात् दसवीं, बारहवीं, बी.ए., एम.ए., बी.टेक., एम.टेक. आदि
तथा प्रबन्धक, चिकित्सक, आई.ए.एस., पी.सी.एस. आदि
अनेक अन्य पदों के लिये दसवीं से आगे तक के प्रमाण पत्र देखकर
सोच समझकर विभिन्न लिखित व मौखिक परीक्षायें लेकर
तथा विद्यार्थियों की सामूहिक वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में
उनके अच्छे वक्ता होने के बाद
उनमें साहस एवं तत्काल उत्तर देने की क्षमता के बाद
बहुत जगह प्रशिक्षण केन्द्र को रिश्वतरूपी दान देने के बाद
मनोवांछित विशेष कोर्स में प्रवेश मिलता है

हमारे लोकतंत्र का केवल एक कोर्स ऐसा है
जिसमें किसी भी पढ़ाई-लिखाई, कार्यक्षमता, प्रमाण पत्र
या किसी परीक्षा, वाद-विवाद क्षमता की आवश्यकता नहीं होती
जी हाँ, वह हैं जनता के प्रतिनिधि या यूँ कहें
जनता के राजाओं के लिये किसी को
किसी भी शिक्षा या प्रशिक्षण की ज़रूरत नहीं होती
अँगूठा छाप से लेकर पढ़े-लिखों को भी
विधानसभा, लोकसभा, राज्यसभा किसी में भी
चुपचाप बैठने की, ऊँघने की, सोने की
न आने की, बीच में चले जाने की पूरी छूट होती है

कार्यकाल में शोर मचाने व हाथापाई की छूट भी होती है
सभा स्थगित होने पर करोड़ों रुपये की हानि भी होती है
धर्म, जाति, आरक्षण, प्रदेश, किसी विशेष नेता के आरक्षित को छूट मिलती है
जनता के हृदय में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि
भविष्य के राजाओं को किसी विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता क्यों नहीं होती
उनके लिये किसी न्यूनतम डिग्री की आवश्यकता क्यों नहीं होती
जबकि चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के लिये भी न्यूनतम शिक्षा आवश्यक है
यह बात पढ़े लिखे बेकार घूमते, भूख से मरते युवाओं में
आत्महीनता, कुण्ठा और विद्रोह की भावना भरती है
ऐसे हालातों में देश में कोई नई क्रान्ति हो सकती है
कितना अच्छा हो कि किसी भी चुनाव में खड़े होने के लिये
न्यूनतम शिक्षा का प्रमाण पत्र होने का व्यवधान निर्धारित हो
तथा चुनाव में प्रत्याशी खड़ा होने से पहले एक ट्रेनिंग करे
जिसमें उसे सरकार चलाने की पूरी शिक्षा दी जाये
तत्पश्चात् उसे उसकी कार्यक्षमता के अनुसार पंचायत,
विधानसभा, लोकसभा या अन्य किसी भी राजकीय क्षेत्र में
चुनाव लड़ने के लिये खड़ा किया जाये
तब शायद कभी देश का ताना-बाना भी सुलझ जाये
सरकार जी अगर यह विनती मान जायें तो बड़ी कृपा हो जाये
युवाओं के हृदय में उठी विद्रोह क्रान्ति की समस्या सुलझ जाये
अन्यथा देश की आन्तरिक व्यवस्था बालों के गुच्छों सी न उलझ जाये

प्रत्येक नागरिक के मन में हमेशा एक प्रश्न रहता है
जब फ्रीज़, टीवी, कंप्यूटर तथा अन्य यन्त्रों को बनाने की
सड़कें, बाँध, घर, इमारतें बनाने की, कपड़ा बुनने की ट्रेनिंग होती है
वैसे अव्यवस्थित हालात में देश सँभालने की ट्रेनिंग क्यों नहीं होती?

पुलिस और फ़ौजी जाँबाज़ कठिनतम ट्रेनिंग करते हैं और
देश रक्षा की शपथ लेकर जान की बाज़ी लगाकर देश बचाते हैं
वैसे ही राजनेता देश को सुधारने की, व्यवस्थित हालात बनाने की,
देश को सुचारु रूप से चलाने की, देश से अनाचार,
व्यभिचार, भ्रष्टाचार, तस्करी, फिरौती, अपहरण, रिश्वत आदि
समाप्त करने की ट्रेनिंग लेकर, देश रक्षा की शपथ लेकर
चुनाव के मैदान में उतरें और देश की आज़ादी को बनाये रखें
अब समय आ गया है कि जनता के प्रश्नों का उत्तर दिया जाये

भावी नेता स्वार्थ, लालच, सात पीढ़ियों के लिये धन की कामना छोड़कर
अपना सारा ध्यान जनता को अपना समझकर
पूरे प्रशिक्षण और आत्मविश्वास के साथ मैदान में उतरें
फिर उन्हें नेता बनने के बाद क़िले जैसे घर, कमांडो और
अन्य रक्षकों या पहरेदारों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी
जनता स्वयं उनसे प्रेम करेगी, उनका आदर करेगी
एक प्रश्न और भी बहुत बार मन में उभरता है
जिसका उत्तर आज तक नहीं मिल पाया पर तंग करता है
जब सब कार्यस्थलों पर सेवानिवृत्ति की एक आयु सीमा होती है
तो नेताओं के लिये कोई आयु सीमा निर्धारित क्यों नहीं होती है
माना उनका बहुमूल्य अनुभव देश की लिये हितकर होता है
लेकिन एक निश्चित आयु के बाद विश्राम भी आवश्यक होता है
उनके अनुभव एवं योग्यता का लाभ अवश्य उठायें
वे नये नेताओं के सलाहकार व मार्गदर्शक बनें
जनता प्रशिक्षित, योग्य प्रत्याशियों को चुने
इससे भावी नेताओं की नई पीढ़ी तैयार होगी
अपने राजाओं से बहुत कुछ पूछा है - उत्तर की आशा रहेगी

OOO

नई पीढ़ी की हार

मानव का जीवन हज़ारों वर्षों से चली आ रहीं
अमूल्य मान्यताओं, परम्पराओं, सभ्यता-संस्कृति को
पूर्णतः ग्राह्य करने के लिये छोटा है
सरस्वती का भंडार इतना बड़ा है कि
एक जीवन उसे समेटने के लिये कम है
इसलिये माता-पिता, गुरू और अपने बड़े विद्वानों के
अनुभवों से हमें ज्ञान प्राप्त करना चाहिये
अपनी शिक्षा-दीक्षा और अनुभवों के साथ
अन्य लोगों की अच्छाइयाँ और उनके अनुभवों को सीखना चाहिये
अगर नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के ज्ञान और अनुभवों को
नकारती रहेगी, उनकी उपलब्धियों को नीचा समझेगी
तो वह लाभान्वित नहीं हो सकेगी
अपने बड़ों के बरसों के ज्ञान और अनुभव से
जो ज्ञान हम ज़रा से समय में प्राप्त कर सकते हैं
उसे उपलब्ध करने में हमें बरसों लग सकते हैं
आज एकल परिवार के नये रिवाज़ के कारण
घर के बच्चे अनुशासन, नित्य नियमपूर्वक करने वाले कार्य
आदर से बोलना, शिक्षाप्रद कहानियाँ, पौराणिक गाथायें
सबसे वंचित होते जा रहे हैं, रामायण, महाभारत,
दादा-दादी की अनुभव भरी कहानियाँ खो चुकी हैं
परम्पराओं से चली मान्यतायें लुप्त हो रही हैं
नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी की बातों को हँसकर नकार देती है
क्या यह नई पीढ़ी की एक बहुत बड़ी हार नहीं है

OOO

वीराने में पनपते पौधे

मेरे आँगन में सीमेंट से जुड़ी ईंटों के बीच
कभी न जाने कहाँ से आकर
कैसे जगह बनाकर
जब कोई पौधा उग जाता है
तो मैं आश्चार्यान्वित होकर
उसे बार-बार देखती हूँ
रोज़ उसकी नई पत्ती उगने की प्रतीक्षा करती हूँ
उस पर पानी डालकर पूछती हूँ
तुम्हें सीमेंट ईंटों के बीच जगह कैसे मिली
काश मैं भी तुम्हारी तरह
वीरान, चट्टानों से भरे जीवन में
अपनी राहें बना सकूँ
तुम्हारी तरह मेरे अरमान, मेरे सपने भी पनप सकें
जीवन की पथरीली राहें पार करके
मैं भी तुम्हारी तरह सिर ऊँचा करके
अपने लक्ष्य तक पहुँच सकूँ
तुम्हारे पत्तों की तरह मेरे प्रयत्नों में भी
नये फूल खिल सकें
आज तुम्हारे पत्तों के बीच से कली झाँक रही है
कल जब तुम्हारा फूल खिलेगा
तो मेरे वीराने में भी शायद
फूलों वाला पौधा पनप जाये
मेरा लक्ष्य भी मेरे निकट आ जाये
ऐसा विश्वास मुझे दो

OOO

अन्दर के उजालों को

जब हम प्रसन्न होते हैं
तब भी आँख बंद करके हँसते मुस्कुराते हैं
बंद आँखों में उजाले ही उजाले नज़र आते हैं
जब डरते हैं, दुख में होते हैं
तब भी आँखें भींचकर रोते हैं
अँधेरे-अँधेरे चारों तरफ़ घेर लेते हैं
जब भी बाहर के अँधेरों से डर लगे
अपने अन्दर के उजालों को और अधिक प्रज्जवलित कर लो
बाहर के अँधेरों को अन्दर के प्रकाश से भर दो
उन अँधेरों को अन्तर्निहित कर लो
जीवन तो अँधेरों-उजालों का संगम है
जीवन की राहें भी बहुत दुर्गम हैं

अच्छे और बुरे पल आते-जाते रहते हैं
सुख के बाद दुख आते हैं तो दुख के बाद
सुख के दिन भी आते रहते हैं
सुख के दिनों को ख़ुशियों से बिताना
पर सुख देने वाले को कभी न भुलाना
दुख की परछाइयाँ जब सुखों को घेरने लगें
अच्छे दिन मुँह फेरने लगें
तब उन अँधियारी काली परछाइयों से डरना मत
साहस से अपने हृदय को ज्योतित कर
अँधेरों को उजालों में परिवर्तित करना
अपनी और अपनों की राहें प्रकाशित करना

OOO

लोकतंत्र का नया अर्थ

यह लोकतंत्र है लोकतंत्र
इसमें नियमों के कई मंत्र
इसमें हर पाँच साल के बाद
चुने जाते हैं नये राजा
कुछ छोटे राजा, कुछ बड़े राजा
कुछ गिने-चुने बड़े-बड़े राजा
ये लोग पाँच वर्ष तक
जनता के ख़ून-पसीने की कमाई से
दिये गये पचासों तरह के करों से
अपने लिये ढोल ख़रीद कर
बजाते हैं बाजा उसके अन्दर दौलत भरकर
बचा-खुचा उन ख़ास लोगों को मिलता है
जिन्हें ग़रीबी की रेखा के नीचे रखना होता है
बड़े-बड़े अमीर राजाओं को भेंट चढ़ाते रहते हैं
बदले में राजा लोग उनकी सहायता करते रहते हैं
हर पाँच वर्ष के बाद ये राजा
फिर निकल कर जाते हैं महलों से झोंपड़ों में
हाथ जोड़-जोड़ कर वोट की भीख माँगते हैं झोंपड़ों में
कितना, कैसा, कहाँ हैं देश का विकास, सुधार, उन्नति
कितनी हो रही है उन्नति, कितनी अवनति
इस लोकतंत्र का नया अर्थ है -
राजगद्दियाँ बनी रहें, चलता रहे देश का यंत्र
यही लोकतंत्र है, लोकतंत्र

OOO

वह गूँजती ख़ामोशी

बहुत मशहूर बात है कि
'भीड़ में भी आदमी अकेला होता है'
लेकिन अकेला तो वह
अपनी ख़ामोशी के साथ भी नहीं होता है
यह उदास अनुभव
सबको कभी-कभी अवश्य होता है
उदासी की ख़ामोशी उसकी रग-रग में छिपी होती है
और कभी-कभी ऐसे क्षण में
जब सुकून की ज़रूरत होती है
तब शान्ति की खोज में आया आदमी
किसी नदी, सागर के किनारे
किसी वीराने वन-उपवन में
या किसी सूनी गुफा में बैठकर
ज़ोर-ज़ोर के क्रन्दन में
ढूँढता है थोड़ी शान्ति
मैं भी कभी-कभी दुनिया के कोलाहाल से दूर
भागकर तोड़ना चाहती हूँ अतीत की लड़ियाँ
चैन नहीं लेने देतीं अतीत से जोड़ती कड़ियाँ
रिश्ते नातों के भूले-अधभूले सन्दर्भ
टूटे, बिखरते, किरच-किरच कुचलते सम्बन्ध
उलझते धागों से अपने-परायों से रिश्ते
जिनमें उलझकर हम दिन रात हैं पिसते
आज भी मैं चैन की चाह में
ख़ामोशी की गोद में आई हूँ
लेकिन मेरे अन्दर भरा कोलाहल

मुझे पागल कर रहा है
मैंने कसकर आँखें बंद कर लीं

दोनों हाथों से ज़ोर से कानों को बंद कर लिया
सिर को घुटनों में दबा लिया
मैं सबकुछ भूलकर अपने आसपास
भूत, भविष्यत्, वर्तमान के प्रति
विस्मृति की चादर फैला रही थी
उस चादर की सलवटों में
ख़ुद को ढक लेना चाहती थी
किन्तु तीनों कालों का स्मरण कराती
गूँजती ख़ामोशी अब भी मुझे ग्रस रही थी
उसकी गूँज पल-पल
मेरी रग-रग को डस रही थी
मैं हिम्मत करके उठी और चल पड़ी

 OOO

मरघट और पनघट

मरघट और पनघट दोनों का नाम सबके घट में रहता है
जहाँ पनघट में घट जल से भरा जाता है
वहीं मरघट में घट फोड़ कर रीता किया जाता है
कैसी विडम्बना है -
घट तो एक जैसे ही हैं पर भाग्य अलग-अलग हैं
एक सबको एक दूसरे से मिलाता है बनाता है आपसी सम्बन्ध
वहीं दूसरा किसी प्रियजन को सदैव के लिये करता विलग है
मरघट पर मिलना और दुख-दर्द को समझना क्षणिक होता है
चिता के ठंडा होते ही सबके सिर से
कबीर का चक्र उठ जाता है
कबीर का चक्र बरसों या सदियों में
किसी एक के सिर पर बच जाता है
तभी तो सैंकड़ों बरसों के बाद कोई एक कबीर पैदा होता है
पनघट पर सखी सहेली पानी भरने के बहाने रोज़ मिलती हैं
एक दूसरे का सुख-दुख कहती सुनती हैं, समझती-समझाती हैं
कभी-कभी नाच-गा कर मनोरंजन भी करती हैं
आज भी पनघट के गीत कविजन लिखते हैं
लोकगीतों में तो पनघट के गीत हृदय से निकलते हैं
पनघट पर ही तो रंग रंगीले कविवर केशव
पीने गये थे सुंदरियों के हाथ से मीठा पानी, बन गये बाबा
चंद्रवदनी, मृगलोचनी, कमनीय कन्याओं के श्वेत केश वाले बाबा
कैसी कविता हृदय से फूटी
जैसा दुश्मन भी करें, वैसा केशों ने कर दिया
बेचारे भग्न हृदय कवि ने न जाने कैसे जल पिया

पिया भी या नहीं, या फिर श्वेत केश सँभालते हुए चले गये
इतने रंगीले कवि महोदय अपने ही केशों द्वारा छले गये
पनघट और मरघट दोनों निरन्तर अपना काम करते रहते हैं
एक आग जलाकर लोगों के हृदय में
जीवन का सत्य जगाना चाहता है
दूसरा जल पिलाकर लोगों के हृदय और बाहर की
आग बुझाना चाहता है
दोनों का प्रभाव सृष्टि के लोगों के
हृदय पर रहता है
एक जलाता है आग, जगाता है सत्य
दूसरा बुझाता है आग, जगाता है हृदय में संगीत, नृत्य
अग्नि और काल का सागर अपनी गति से बहता है
मरघट और पनघट दोनों का नाम सबके घट में रहता है

OOO

- प्रकाशित कृतियाँ -

गुनगुनी धूप सी यादें...
कविता संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

कविता-संग्रह
मैं और मेरी ज़िन्दगी
बिमला रावर सक्सेना

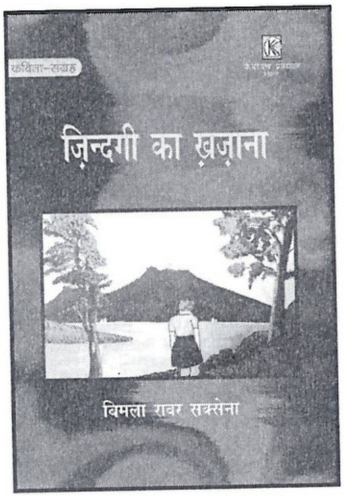
कविता-संग्रह
ज़िन्दगी का ख़ज़ाना
बिमला रावर सक्सेना

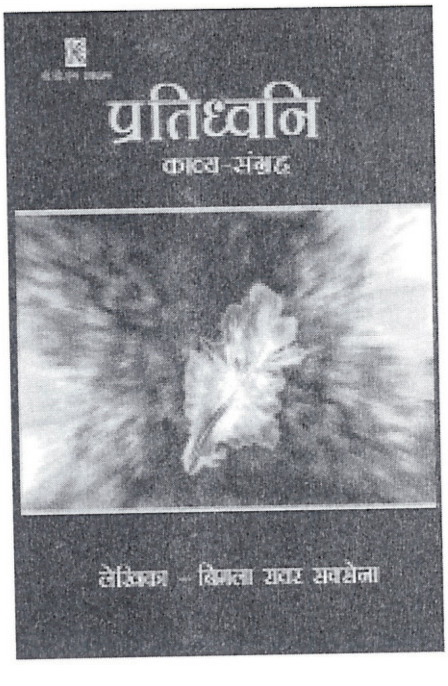
प्रतिध्वनि
काव्य-संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

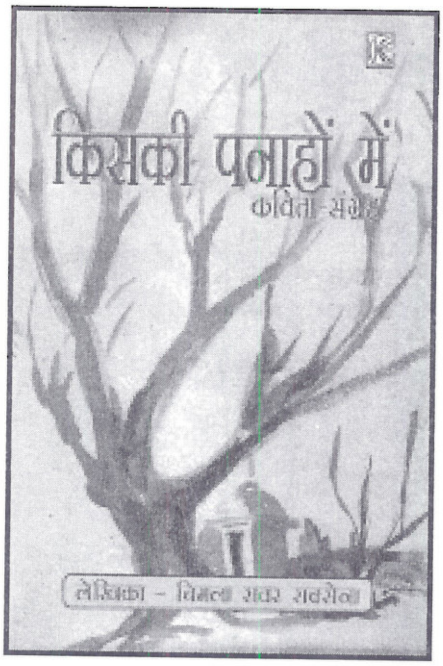
किसकी पनाहों में
कविता-संग्रह
लेखिका - बिमला रावर सक्सेना

कविता-संग्रह
जिन्दगी और मुखौटे
बिमला रावर सक्सेना

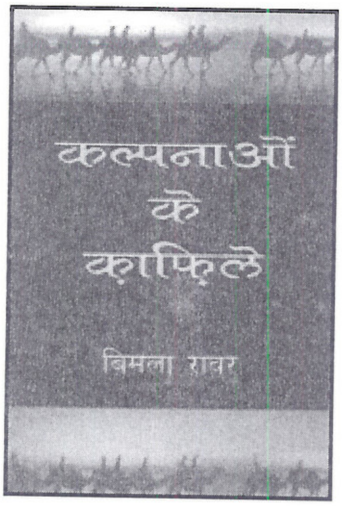
कल्पनाओं
के
क़ाफ़िले
बिमला रावर

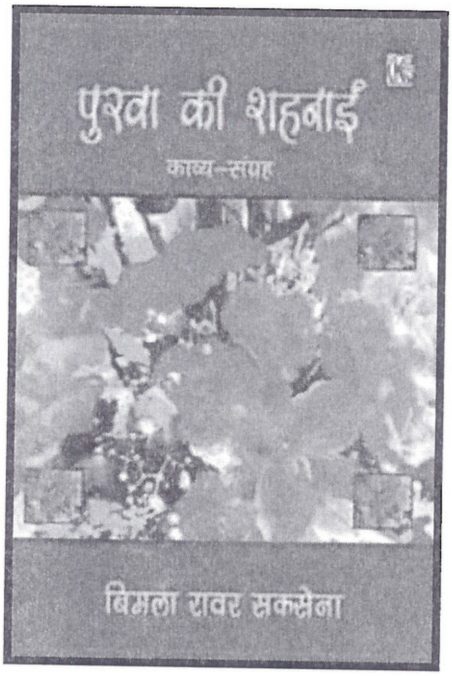
पुरवा की शहनाई
काव्य-संग्रह
बिमला रावर सक्सेना

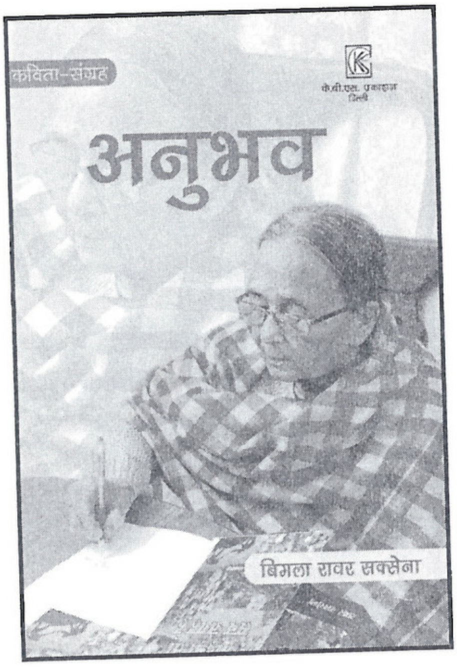
कविता-संग्रह
के.बी.एस. प्रकाशन
दिल्ली
अनुभव
बिमला रावर सक्सेना

पथिक गीत गाते जाओ
(काव्य-संग्रह)
बिमला रावर सक्सेना

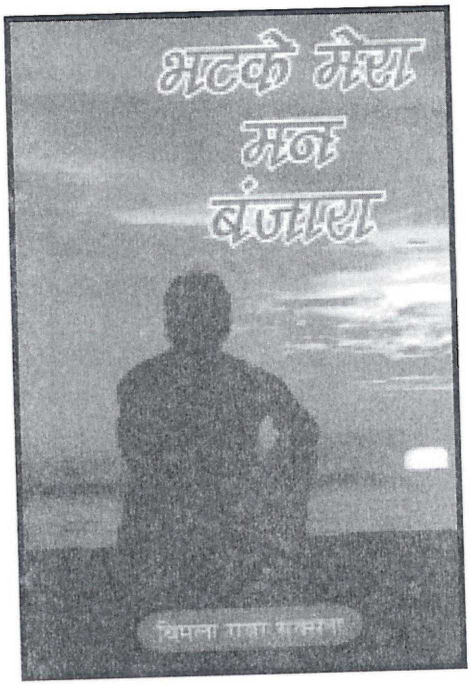
भटके मेरा मन बंजारा

फुलवारी
बाल-गीतों
की
बिमला रावत

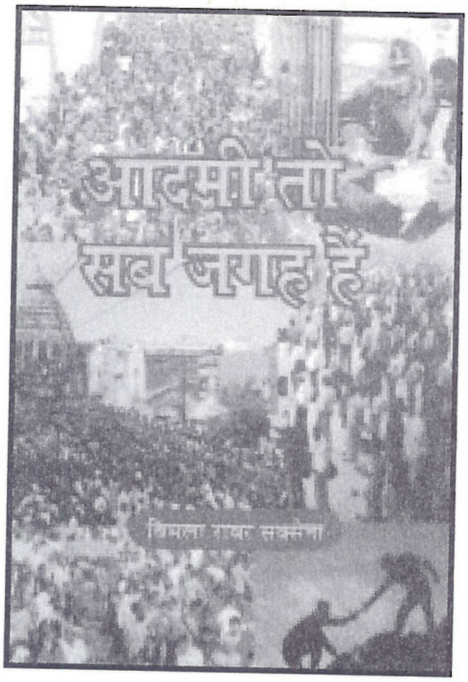
आदमी तो
सब जगह हैं

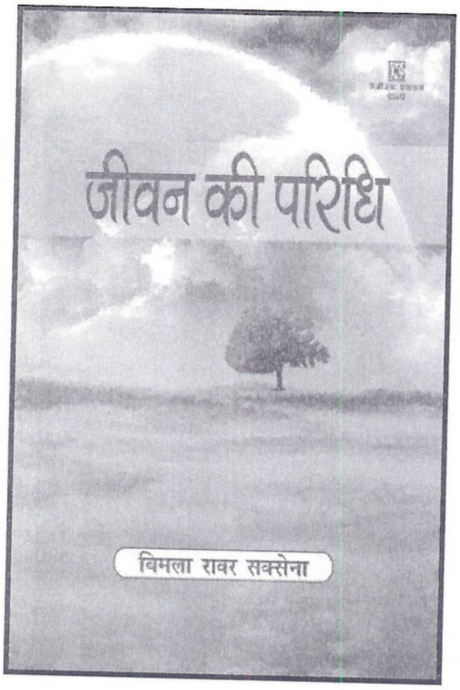
जीवन की परिधि
विमला रावर सक्सेना

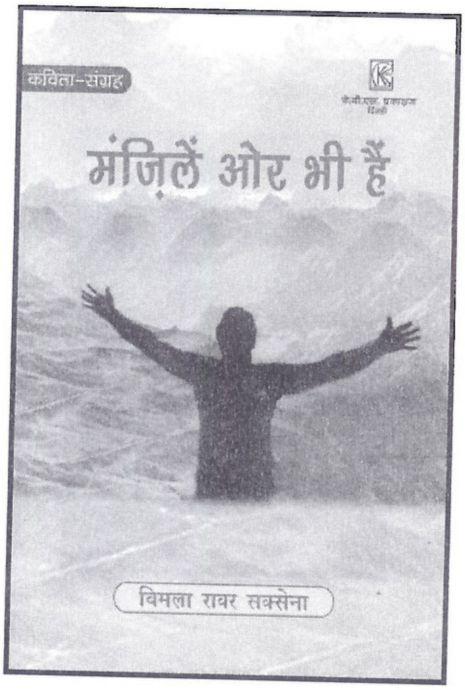
कविता-संग्रह
मंज़िलें ओर भी हैं
विमला रावर सक्सेना